तनज़ीमुल मकातिब

हिन्दी मासिक

जून 2001

अल्लाह ने फ़रमाया!

मेरी इज़्ज़त व जलाल की क़सम
मैं जब किसी बन्दे पर क़ियामत
में अज़ाब करना चाहता हूँ तो
दुनिया में सारी नेकियों का
हिसाब कर देता हूँ कभी रोज़ी
बढ़ा कर कभी बदन में
तन्दुरुस्ती देकर और दुनिया में
अम्न देकर। और अगर कुछ
बाक़ी रह जाता है तो मौत को
आसान बना देता हूँ

(हदीस-ए-कुदसी)

بسم الله الرحمن الرحيم

तनज़ीमुल मकातिब

हिन्दी मासिक

जून – २००१

जिल्द न० 1 शुमारः न० 11

एडीटर :

सैय्यद तसदीक़ हुसैन रिज़वी

पब्लिशर :

तनज़ीमुल मकातिब

गोलागंज लखनऊ, यू० पी०

फोन : 215115 फैक्स : 228923

E-mail : tanzeem@tanzeem.com

फ़ेहरिस्त

	मज़मून	मज़मून निगार	पेज न०
1.	मोजिज़ा और उसका मक्सद	इदारियः	3
2.	सूरए बक्रः की आयतें	अनवारुल कुरआन से	5
3.	नमाज़	साबिर अली इमरानी	11
4.	क्या इसलामी कानून.........	ए० अब्बास	14
5.	तौहीद	ज़ाइर अब्बास	19
6.	जनाब ख़दीजा का अक्द	ज़ैग़म अब्बास	21
7.	पैगम्बर-ए-इसलाम......	गुलाम महदी मौलाई	22
8.	सादिक-ए-आले मुहम्मद.....	मिर्ज़ा ग़ाज़ी हुसैन	26
9.	इमाम जाफ़र सादिक अ०....	आबिद जलालपूरी	28
10.	शीअः कौन?	इहतिशाम रिज़ा नक्वी	29
11.	हिजरत......	मुहम्मद आरिफ़ रिजवी	32
12.	फ़कीरों और........	अली सईद थीथकवी	35
13.	हराम माल	नईम अब्बास नक्वी	37
14.	कम्प्यूटर और हम	अम्मार नक्वी	38
15.	शार्ट कट	फकीहुल हिन्दी	40
16.	पैग़ाम-ए-मुहम्मद स०	पयाम आज़मी	44
17.	इमाम जाफ़र सादिक अ०	कलीम इलाहाबादी मरहूम	47
18.	सवालात व जवाबात	इदारा	48
19.	अपना हिसाब खुद कीजिये	इदारा	50
20.	बताओ फकीर और...:....	आसिफ़ सफ़वी	54

मोजिज़ा और उसका मक़सद

मोजिज़ा हमारे समाज में एक जाना पहचाना लफ़्ज़ है। एक ऐसा काम जिस का करना एक आम आदमी के लिये नामुम्किन हो और जिसे खुदावन्दे आलम के बनाए हुए नबी व रसूल कर सकते हों।

अम्बिया अ० क्यों कि अपने नुबूवत के दावे से पहले समाज में एक आम आदमी की हैसीयत से ज़िन्दगी बसर करते हैं। इसलिये जब वह अपनी नुबूतव या इमामत का एलान फ़रमाते और खुद को खुदा का नुमाइन्दा कहते तो लोग उन से दलील माँगते थे क्यों कि कोई भी दावा बग़ैर किसी दलील के कुबूल नहीं किया जा सकता। इस लिये जो लोग इन हस्तियों से बहुत पहले से वाकिफ़ होते थे इस बात के क़ायल होते कि ये सच्चे और अमानतदार हैं इन से कभी कोई ऐसा काम नहीं हुआ जो किसी भी तरह से बुरा हो ऐसे लोगों के लिये ये किरदार ही दलील बन जाता था। और वह फ़ौरन उन के किये हुए दावे को कुबूल कर लेते थे।

दूसरा गरोह ऐसे लोगों का होता है जो पहले ही से किसी आसमानी दीन पर ईमान रखते थे और उस दीन की किताबों या नबीयों के ज़रीए जानते थे कि आने वाले ज़माने में फुलाँ फुलाँ निशानियों और अलामतों वाला नबी ज़ाहिर होगा वह इन अलामतों व निशानियों को उस नुबूवत का दावा करने वाले में पा कर उसकी नुबूवत के क़ायल हो जाते थे।

तीसरा गरोह ऐसे आम लोगों का होता है जो न ही किसी पिछले दीन पर ईमान रखते हैं कि जिस के ज़रीए वह अपने दौर के नबी तक पहुँच सकें। न उन में इतनी सलाहीयत होती है कि वह नबी की दलीलों के ज़रीए अल्लाह की हुज्जत को पहचाने तो उन के लिये कोई ऐसी महसूस दलील लानी होती है कि उनके पास इनकार की गुंजाइश न रहे। और ऐसे ही लोगों के लिये मोजिज़े की सूरत में महसूस दलील पेश करना ज़रूरी है।

इस लिये उस खुदा पर वाजिब है जिस ने किसी नबी को बन्दों की हिदायत के लिये भेजा है कि वह उस के लिये दलील भी पेश करे। अगर दलील पेश न की जाए तो बन्दों पर हुज्जत तमाम न होगी और बगैर किसी दलील के कुबूल करने का पाबन्द किया जाए तो लोग किसी और दावेदार के दावे को कुबूल करने का हक़ रखेंगे। इस लिये बन्दों को झूठे दावेदारों से बचाने के

लिये खुदा के नुमाइन्दों के पास किसी महसूस दलील का होना ज़रूरी है इस सिलसिले में खुदा अपने नुमाइन्दों को जिस दलील से नवाज़ता है जो दलील देता है उसी को मोजिज़ा कहते हैं।

यहीं से ये बात भी ज़ाहिर हो जाती है कि मोजिज़ा दिखाना अम्बिया का मक़सद नहीं है कि वह सिर्फ़ इस लिये आए हैं कि मोजिज़े दिखाएँ बल्कि उन का मक़सद क़ानूने इलाही का लाना उस का लागू करना और ज़ालिमों के चंगुल से लोगों को छुड़ाना है।

अइम्मा अलैहिमुस्सलाम के अक़ीदत मन्दों को मोजिज़े की ज़रूरत नहीं है क्योंकि उन पर अइम्मा की हक़्क़ानीयत साबित है बल्कि उन का फ़र्ज़ है कि अइम्मा की बचाई हुई शरीअत को लागू करने के सिलसिले में कोशिश करें खुद अमल करें और दूसरों को अमल की दावत दें।

अगर आप !

तनज़ीमुल मकातिब

हिन्दी मासिक

के मेम्बर बने हैं और आप का पता बदल गया है या आप को मैगज़ीन नहीं मिली है तो आप ख़त लिखें अपना पता पूरा और साफ़-साफ़ लिखें।

ताकि आपको शुमारः भेजा जा सके।

लोगो! यह दुनिया उनका घर है जिनका कोई घर नहीं है। और उनका माल है जिनका कोई माल नहीं है। यहाँ वो शख़्स माल जमा करता है जिसके पास अक़्ल नही है और वह शख़्स अकड़ता है जिसे आख़िरत का यक़ीन नही है और वह शख़्स लालच करता है जिसे खुदा पर भरोसा नही है। और इसके ख़ाहिशात को वह शख़्स तलब करता है जिसके पास मारिफ़त नही है।

(याद रखो) जिस शख़्स ने इस ढल जाने वाली नेमत, इस कुछ दिन की ज़िन्दगी और इस ख़त्म हो जाने वाले घर की ख़ाहिश को अपना लिया उसने अपने ऊपर ज़ुल्म किया। अपने परवरदिगार की बात ठुकराई अपनी आख़िरत को भूल गया और उसे दुनिया की ज़िन्दगी ने धोखा दे दिया।

(हदीस-ए-क़ुदसी)

सूरए ब-क़-र:

(आयत न० 51 से 70 तक)

अनवारुल कुरआन से

51. "और हम ने मूसा से चालीस रातों का वादा लिया तो तुमने उनके बाद गौसाला तैयार कर लिया कि तुम बड़े ज़ालिम हो।"

52. "फिर हमने तुम्हें माफ़ कर दिया कि शायद शुक्रगुज़ार बन जाओ"।

53. "और हम ने मूसा को किताब और हक़ व बातिल को अलग करने वाला क़ानून दिया कि शायद तुम हिदायत पा जाओ।"

54. "और वह वक़्त भी याद करो जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि तुम ने गौसाला बना कर अपने ऊपर ज़ुल्म किया है अब तुम ख़ालिक़ की बारगाह में तौबा करो और अपने नफ़्सों को क़त्ल कर डालो कि यही तुम्हारे हक़ में बेहतर है। फिर ख़ुदा ने तुम्हारी तौबा क़ुबूल कर ली कि वह बड़ा तौबा क़ुबूल करने वाला मेहरबान है।"

55. और वह वक़्त भी याद करो जब तुमने मूसा से कहा कि हम उस वक़्त तक ईमान न लाएँगे जब तक ख़ुदा को खुल्लम खुल्ला न देख लें जिस के बाद बिजली ने तुम को ले डाला और तुम देखते ही रह गए।"

नोट- इस वाक़िए से साफ़ ज़ाहिर होता है कि ख़ुदा देखने के क़ाबिल नहीं है और न किसी आदमी में इस बात की सलाहीयत पैदा हो सकती है और जब जनाबे मूसा जैसा पैग़म्बर न देख सके तो दूसरे लोगों के देखने का क्या सवाल पैदा होता है।

56. "फिर हम ने तुम्हें मौत के बाद ज़िन्दा कर दिया कि शायद अब शुक्र करने वाले हो जाओ।"

नोट- इस आयत में मौत के बाद दोबारा भेजने का तज़किरा इसलाम के रजअत के अक़ीदे की बेहतरीन दलील है कि जिस की

तरफ़ आले मुहम्मद अलैहिमुस्सलाम ने बार बार इशारा फ़रमाया है। और जो ज़ालिमीन के लिये बेहतरीन तम्बीह और मज़लूमीन के लिये बेहतरीन तसकीन है। आख़िरत का सवाब व अज़ाब अपने मक़ाम पर है दुनिया में रजअत के अक़ीदे का तअस्सुर ही कुछ और है।

57. "और हम ने तुम्हारे सरों पर बादल का साया किया। तुम पर मन व सलवा उतारा कि पाकीज़ी रिज़्क़ इतमीनान से खाओ। इन लोगों ने हमारा कुछ नहीं बिगाड़ा बल्कि खुद अपने आप पर ज़ुल्म किया है।"

58. "और वह वक़्त भी याद करो जब हमने कहा कि इस गाँव में चले जाओ और जहाँ चाहो इतमीनान से खाओ और दरवाज़े से सजदा करते हुए और हित्ता कहते हुए दाख़िल हो कि हम तुम्हारी खताओं को माफ़ कर देंगे और हम नेक अमल वालों की जज़ा बढ़ा कर भी देते हैं।"

नोट- हित्ता के लफ़्ज़ की मुनासिबत से बैतुल मुकद्दसके एक दरवाज़े को "बाबे हित्ता" कहा जाता है और इसलामी रवायतों में मासूम को इस लफ़्ज़ से याद किया जाता है। हित्ता के मानी गिराना और झाड़ देना है। यानी परवरदिगार तेरी शान ये है कि तू गुनाहों को झाड़ दे और बन्दे को पाक व पाकीज़ा बना दे।

नोट- बनी इसराईल इस क़दर बेईमान थे कि काम में पैरवी तो बड़ी बात है हित्ता व मग़फ़िरत के लफ़्ज़ को ज़बान पर नहीं लाना चाहते थे और इस के बजाय हित्ता कह रहे थे यानी आख़िरत के बजाय दुनिया की नेमतों की फ़िक्र में लगे हुए थे यही वह बात थी जो अल्लाह के अज़ाब का सबब हो गई। दुनिया को आख़िरत पर मुक़द्दम करना बदतरीन काम है।

59. "मगर जालिमों ने जो बात उन से कही गई थी उसे बदल दिया तो हमने उन ज़ालिमों पर उन की नाफ़रमानी की वजह से आसमान से अज़ाब नाज़िल कर दिया।"

नोट- ज़ाहिरी तौर पर दुनिया में न आसमान से ग़िज़ा नाज़िल होती है न असा मारने से चश्मा निकलता है लेकिन परवरदिगारे आलम ने हुज्जत तमाम करने के लिये ये सब कुछ कर दिया और इनसानों को मुतवज्जेह कर दिया कि हमारे हो जाओ तो इक़्तिसादी पाबन्दियों या नाकाबन्दी की कोई फ़िक्र नहीं हैं हम असा से चश्मा निकाल सकते हैं और फ़िज़ा से मन व सलवा उतार सकते हैं।

60. और उस मौक़े को याद करो जब मूसा ने अपनी क़ौम के लिये पानी का सवाल किया तो हम ने कहा कि अपना असा पत्थर पर मारो जिसके नतीजे में बारह चश्मे जारी हो गए और सब ने अपना अपना घाट पहचान लिया अब हम ने कहा कि मन व सलवा खाओ और चश्मे का पानी पियो और ज़मीन पर फ़साद न फैलाओ।"

61. "और वह वक़्त भी याद करो जब तुमने मूसा से कहा कि हम एक तरह के खाने पर सब्र नहीं कर सकते। आप परवरदिगार से दुआ कर दीजिये कि हमारे लिये ज़मीन से सब्ज़ी, ककड़ी, लहसुन, मसूर और प्याज़ वग़ैरा पैदा करे मूसा ने तुम्हें समझाया कि क्या बेहतरीन नेमतों के बदले मामूली नेमत लेना चाहते हो तो जाओ किसी शहर में उतर पड़ो वहाँ ये सब कुछ मिल जाएगा। अब उन पर ज़िल्लत और मोहताजी की मार पड़ गई और वह अल्लाह के ग़ज़ब में गिरफ़्तार हो गए। ये सब इस लिये हुआ कि ये लोग आयते इलाही का इनकार करते थे और नाहक़ खुदा के नबीयों को क़त्ल कर दिया करते थे इस लिये कि ये सब नाफ़रमान थे और जुल्म किया करते थे।

नोट- अल्लाह की निशानियों का इनकार और माद्दी ग़िज़ाओं की फ़िक्र इनसानी ज़िन्दगी की सब से बड़ी परेशानी है। जो शख़्स खुदा के दिये हुए को काफ़ी नहीं समझता और हवस में पड़ जाता है और रंगबिरंग की ग़िजाओं पर जान देता है और फिर इन ग़िज़ाओं का शुक्रिया अदा नहीं करता उस के हिस्से.... .

.....में ज़िल्लत और मोहताजी के सिवा और कुछ नहीं है। दुनिया के खानों और ग़िज़ाओं की ख़ास बात ये है कि जितनी क़िस्में ज़ियादा होंगी उतनी ही मोहताजी ज़ियादा होगी। सादा खाना इनसान खुद भी आसानी के साथ हासिल कर सकता है। तरह तरह के रंग और क़िसमों के खानों की फ़िक्र ही उसे मोहताज और ज़लील बना देती है।

62. जो लोग बज़ाहिर ईमान लाए या यहूदी, नसारा और सितारा परस्त हैं इन में जो सचमुच अल्लाह और आख़िरत पर ईमान लाएगा और नेक अमल करेगा उस के लिये परवर दिगार के यहाँ अज्र व सवाब है और कोई दुख व डर नहीं है।

नोट- नसारा को नसारा इस लिये कहा जाता है कि ये नासिरा नाम के गाँव में आबाद थे जिस तरह यहूद, यहूद इब्ने याकूब की औलाद में थे। नसारा यानी ईसाई। ऊपर की आयत से साफ़ है कि सिर्फ़ ईमान का दावा काफ़ी नहीं है जब तक वाक़ई ईमान और अच्छा अमल जिसे अमल-ए-सालेह कहा जाता है न हो और ये भी वाज़ेह कर दिया गया है कि पहले ग़ैर मज़हब पर होना ईमान लाने या अमल करने की राह में रुकावट नहीं बनता। इनसान कुफ्र भी अपने इख़्तियार से इख़्तियार करता है और ईमानभी अपने इरादे से इख़्तियार करता हैं। पैदाइशी तौर पर न कोई काफ़िर होता है न मुसलमान। फ़ितरते इसलाम पर पैदा होना और है और मुसलमान होना और है। ईमान के साथ सिर्फ़ अल्लाह है और आख़िरत का ज़िक्र इस लिये किया गया है कि रसूल पर ईमान हक़ीक़त में अल्लाह पर ईमान का हिस्सा है जिस तरह इमाम पर ईमान, रूसल पर ईमान का हिस्सा है। रसूल पर ईमान के बग़ैर खुदा पर ईमान लाने का कोई सवाल ही नहीं पैदा होता है।

63. और उस वक़्त को याद करो जब हम ने तुम से तौरैत पर अमल करने का अहद लिया और तुम्हारे सरों पर तूर के पहाड़ को लटका दिया कि अब तौरैत को मज़बूती से पकड़ो और जो कुछ इसमें है उसे याद रखो शायद इस तरह परहेज़गार बन जाओ।

64. फिर तुम लोगों ने उस के
खि़लाफ़ किया कि अगर खुदा
का फ़ज़्ल और अल्लाह की
रहमत शामिल न होती तो
तुम घाटा उठाने वालों में हो
जाते।

नोट- बनीइसराईल से तौरैत पर अमल करने का अह्द लेने के लिये सर पर तूर का पहाड़ लटका दिया गया तो उन्होंने अह्द कर लिया लेकिन फिर भी अमल न किया अकसर लोग कहा करते हैं कि इसलाम तलवार के ज़ोर पर फैल सकता है कुर्आने मजीद में ये वाज़ेह कर दिया कि जिन को नहीं मानना होता है वह बहरहाल नहीं मानते हैं चाहे अल्लाह का अज़ाब सर पर लटक रहा हो।

65. तुम उन लोगों को भी जानते हो
जिन्होंने सनीचर के मुआमिले
में ज़ियादती से काम लिया तो
हम ने हुक्म दे दिया कि अब
ज़िल्लत के साथ बन्दर बन
जाएँ।

नोट- बज़ाहिर मुख़ालिफ़त बहुत मामूली थी कि सनीचर के दिन मछली का शिकार मना था और वह जुमे के दिन गढ़े खोद दिया.... ..

....करते थे कि मछलियाँ इस तरफ़ आ जाएँ और उन्हें पकड़ लें लेकिन खुदा ने उनहें बन्दर बना दिया कि अगर तुम्हें इस तरह की हेराफेरा आती है तो हमें भी शक्ल बदलना आती है। खुदाकिसी बन्दे का मोहताज नहीं है सब उसके मोहताज हैं। इनसानीयत का हक़ उन्हीं लोगों का है जो अल्लाह के अहकाम की इताअत करते हैं बाक़ी सब बन्दर हैं। यूँ देखने में न भी हो तो अन्दर से आदतें बन्दर की ही हैं। नसीहत सिर्फ़ तक़वा इख़्तियार करने वाले लोग हासिल करते हैं।

66. और हमने इस जिन्सी बदलाव
को देखने वालों और बाद
वालों के लिये इबरत और
अल्लाह से डरनें वालों के
लिये नसीहत बना दिया।

67. और वह मौक़ा भी याद करो
जब मूसा ने क़ौम से कहा कि
खुदा का हुक्म है कि एक
गाय ज़ब्ह करो तो उन लोगों
ने कहा कि आप हम से
मज़ाक कर रहे हैं फ़रमाया
कि खुदा की पनाह कि मैं
जाहिलों में से हो जाऊँ।

नोट- बनीइसराईल में लोगों ने एक रईस को क़त्ल कर दिया था कि जो कुछ उसने छोड़ा है आपस में बाँट लें ओर दूसरे पर इलज़ाम रख दिया खुदा ने कहा कि गाय ज़ब्ह करके उसे मक़्तूल के जिस्म से लगाओ वह ज़िन्दा होकर क़ातिल का नाम बता देगा। उन लोगों ने इलज़ाम बाक़ी रखने के लिये बहुत देर तक बहाना किया और आख़िर में मजबूर हुए। इलज़ाम रखने वाले सच्चाई का सामना करने से हमेशा घबराते हैं और उन का अनजाम ज़िल्लत व रुस्वाई के अलावा कुछ नहीं होता। इस वाक़िए से यह भी मालूम हो गया कि जो खुदा एक गाय के गोश्त को मस कर के मक़तूल को ज़िन्दा कर सकता है वह मसलहत के तक़ाज़े पर इनसान की ठोकर से भी मुर्दे को ज़िन्दा कर सकता है। और झूले से जिस्म मस करने वाले को नए बाल व पर भी अता कर सकता है। अल्लाह की कुदरत से कोई चीज़ दूर नहीं है। सिर्फ़ मसलहत के तक़ाज़े की ज़रूरत है।

68. उन लोगों ने कहा कि अच्छा खुदा से दुआ कीजिये कि हमें इस की हक़ीक़त बताए उन्होंनें कहा कि ऐसी गाय चाहिये जो न बूढ़ी हो न बच्चा-बीच की हो अब हुक्मे ख़ुदा पर अमल करो।

69. उन लोगों ने कहा ये भी पूछिये कि रंग क्या होगा? कहा कि हुक्मे ख़ुदा है कि ज़र्द भड़क दार रंग की हो जो देखने में भली मालूम हो।

70. उन लोगों ने कहा कि ऐसी तो बहुत सी गाये हैं अब कौन सी ज़ब्ह करें उसे बयान किया जाए हम इन्शाअल्लाह तलाश कर लेंगे।

- माल मौत तक साथ देता है औलाद क़ब्र तक और आमाल हश्र तक।
- मोमिन को छींक आ जाए तो कहो यरहमुकुमुल्लाह और तीन मरतबा से ज़ियादा आए तो कहो शिफ़ाकल्लाह कि यह बीमारी की अलामत है

हज़रत अली अ०

डाक की कुछ कानूनी अड़चनों की वजह से शुमारः देर से आप को मिल रहा है। जिसके लिए इदारा माज़िरत चाहता है।

नमाज़

साबिर अली इमरानी

"और पैग़म्बर आप दिन के दोनों हिस्सों में और रात गए नमाज़ क़ायम करें कि नेकियाँ बुराई को ख़त्म कर देने वाली है"

(सूरए हूद आयत न० 114)

इनसान की तरबियत और उस के किरदार को बनाने में नमाज़ एक अहम रोल अदा करती है। इसी लिये इसे तमाम फ़ुरूए दीन में सब से ज़ियादा अहम्मियत हासिल है। यहाँ तक कि रसूले इसलाम स० इसे दीन का सुतून और इसलामी बातों में सब से ऊपर बताते हुए फ़रमाते हैं "कि नमाज़ की मिसाल खैमें के सुतून की है। अगर खैमे का सुतून जमीन पर मज़बूती से ज़मा होगा तो तनाबों रस्सियों और ख़ेमे के पर्दे से फ़ायदा हासिल किया जा सकता है और अगर सुतून टूट जाए तो तनाबों और रास्सियों से कोई फ़ायदा नहीं होता। आप ने ये भी इरशाद फ़रमाया कि नमाज़ की तरफ़ तुम्हें बहुत तवज्जोह करनी चाहिये क्यों कि नमाज़ दीन को मान लेने के बाद इसलामी बातों मे सबसे पहले है" खुद रसूलुल्लाह स० नमाज़ को जितनी अहम्मियत देते थे उसके बारे में अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली अ० फ़रमाते हैं कि "रसूलुल्लाह स० रात के खाने और दूसरे कामों पर नमाज़ को मुक़द्दम रखते थे और नमाज़ का वक़्त आ जाने पर गोया अजीज़ों और दोस्तों को नहीं पहचानते थें"(तम्बीहुल ख़वातिर स०333) हज़रत इमाम जाफ़र सादिक अ० ने फ़रमाया कि "इबादत और अल्लाह की इताअत ज़मीन पर खुदा का बन्दा बन कर रहना है और कोई बन्दगी नमाज़ की बराबरी और उस से मिलाने के क़ाबिल नही" कुरआने करीम के सूरए "अनकबूत" में नमाज़ को बेहूदा और बुरी बातों से रोकने वाला बताया गया है। बिहारुल अनवार और मजमउल बयान में आया है कि अनसार से तअल्लुक रखने वाला एक जवान बाक़ायदगी से रसूलुल्लहाह स० के पीछे बराबर नमाज़ अदा क़रता था। लेकिन इस के साथ-साथ वह बुराइयों और गुनाह वाले कामों को भी करता था। लोगों ने पैग़म्बर स० से उस के मुतअल्लिक बात की तो आप ने फ़रमाया

कि"एक दिन ऐसा आयगा जब उसकी यही नमाज़ उसे बुरे आमाल और गुनाह से रोकेगी। ज़ियादा दिन न गुज़रे थे कि ऐसा ही हुआ उस जवान ने तौबा कर ली। हाँ नमाज़ हरहालत और हर सूरत व मौक़े पर रूह पर ऐसे असरात नहीं डालती कि इनसान बुराइयों से बचने लगे इसी लिये अमीरूल मोमिनीन अ० का इरशाद है कि "कुछ लोग ऐसे हैं जो नमाज़ के लिये खड़े होते है। लेकिन सिवाय थकावट के उन्हें कुछ नहीं मिलता। इमाम जाफ़र सादिक अ० फ़रमाते हैं कि जान लो नमाज़ ज़मीन पर खुदा की तरफ से गुनाहों से रोकने वाली एक चीज़ है। जो कोई ये जानना चाहे कि उसने अपनी नमाज़ से कितना फ़ायदा हासिल किया है उसे देखना चाहिये कि नमाज़ ने उसे बुरे नापसन्दीदा आमाल से रोका है या नहीं? क्यों कि उस ने नमाज़ से उतना ही फ़ायदा उठाया है जितना वह गुनाहों और नापसन्दीदा कामों से दूर रहा है।" जब नमाज़ पूरी तवज्जोह और लगन और कुबूल होने की तमाम शर्तों का लिहाज़ रखते हुए पढ़ी जाए तो वह "हसनः"मुकम्मल नेकी है जैसा कि कुर्आन में इरशाद है कि नेक आमाल यानी आमाले हसनः इनसान की बुराइयों और गुनाहों को खत्म कर देते हैं और उन्हें नामए आमाल से मिटादेते है। इसी सिलसिले मे हज़रत अली अ० रसूलुल्लाह स० से रवायत करते हैं कि आप ने फ़रमाया कि पाँच वक़्त की नमाज़ मेरी उम्मत के लिये एक ऐसी नहर की तरह है जो तुम में से हर आदमी के घर के आगे बह रही हो, अगर उस के जिस्म पर मैल "कुचैल होऔर वह रोज़ाना पाँच मरतबा उस नहर में नहाए तो क्या उस के जिस्म पर गन्दगी बाक़ी रहेगी?नहीं बाक़ी रहेगी। खुदा की क़सम पाँच वक़्त की नमाज़ मेरी उम्मत के लिए ऐसी असर रखने वाली है यानी गुनाहगार इनसान की गुनाहों मे भरी हुई रूह को गुनाहों से पाक करा देती है। आलमीन की औरतों की सरदार पैग़म्बरे इसलाम की बेटी हज़रत फ़ातिमा ज़हरा अ० ने अपने वालिदे बुर्जुगवार हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा स०से पूछाः बाबा जान! उन मर्दों और औरतों का क्या अनजाम होगा जो नमाज़ को मामूली समझते है? रसूलल्लाह स० ने फरमायाः ऐ फातिमा! ऐसे मर्द और ऐसी औरतें जो नमाज़ को मामूली और बे अहम्मियत समझते हैं वह पन्द्रह बलाओं में फँसेगे। इनमें से छः बलाओं का वह दुनिया में, तीन बलाओं का मौत के वक़्त, तीन

बलाओं का वह क़ब्र में और तीन बलाओं का क़ब्र से निकाले जाने के बाद क़ियामत के दिन सामना करेंगे। जिन बलाओं से वह दुनिया में घिरेंगे वह ये हैं।

1. खुदा उस की उम्र बेबरकत कर देता है।

2. खुदा उस की रोज़ी से बरकत उठा लेता है।

3. खुदा उसके चेहरे से नेक लोगों की अलामतें मिटा डालता है।

4. जो इबादतें वह अन्जाम देता है उनकी जज़ा से महरूम रहता है।

5. उसकी दुआएँ आसमान पर नहीं पहुँचती।

6. उस के लिये अच्छे और नेक लोगों की दुआएँ बे फ़ायदा होती हैं।

वह बलाएँ जिन से वह मौत के वक़्त घिरेगा।

1. ज़लील मौत मरेगा।

2. भूखा दुनिया से उठाया जाएगा कि अगर दुनिया की तमाम नहरों का पानी उसे पिला दिया जाय तब भी उस की प्यास न मिटे।

क़ब्र में जो बलाएँ होंगी

1. खुदा उसे क़ब्र में तकलीफ़ देने के लिये एक फ़रिश्ता मुकर्रर करेगा।

2. क़ब्र उस के लिये तंग होगी।

3. उसकी क़ब्र में चारों तरफ़ अँधेरा होगा।

वह बलाएँ जिन का क़ब्र से निकाले जाने के बाद वह कयामत के दिन सामना करेगा।

1. खुदा उस पर एक फ़रिश्ता मुअय्यन करेगा जो उसे ज़मीन पर खींचेगा और लोग इसी हाल में उस का तमाशा देख रहे होंगे।

2. उस से सख़्ती के साथ हिसाब लिया जाएगा।

3. खुदा उस पर निगाह न करेगा और उसे गुनाहों से पाक न करेगा। और सख़्त अज़ाब उसके इन्तिज़ार में होगा।

रसूलुल्लाह स० का इर्शाद है "कि जो कोई नमाज़ की अदायगी में बग़ैर किसी वजह के देर करे यहाँ तक कि उस की नमाज़ कज़ाहो जाए तो उस के आमाल बर्बाद हो जाएँगे।"

इमाम जाफ़र सादिक अ० का इर्शाद है "कि हमारी शफ़ाअत ऐसे आदमी के हिस्से में न आयेगी जो नमाज़ को अहम्मियत न देता हो।"

बेहतरीन इन्सान वह है जो लोगों को खाना खिलाए सलाम में पहल करे और नमाज़–ए–शब पढ़े।

रसूलुल्लाह स0

क्या इसलामी क़ानून पुराना हो चुका है?

ए० अब्बास

क्या आज इस दुनिया की तअज्जुब व अचम्भे में डाल देने वाली तरक़्क़ी को देखते हुए माना जा सकता है कि इसलाम इनसानियत की दुनिया का इन्तिज़ाम सँभाल सकता है और इनसानों की मौजूदा ज़रूरतों को पूरा कर सकता है? असलियत में क्या आज वो वक़्त नहीं आ गया है कि इनसान जो अपने इल्म के बूते पर आसमानों की बुलन्दियों पर जा पहुँचा है और सितारों पर क़ब्ज़ा कर रहा है अब पुराने मज़हबी ख़यालात को दूर फेंक कर अपनी शादनदार ज़िन्दगी के लिये नए रास्तों की तलाश करे? और अपनी ज़हनी सलाहीयतों और इरादे की कूवत को अपनी कामियाबियों को बढ़ाने और हासिल करने में लगाए?

इन सवालों का जवाब देने से पहले एक बात याद दिलाना ज़रूरी है और वो बात ये है कि हम कुदरती तौर पर नई चीज़ को पुरानी चीज़ से ज़ियादा पसन्द करते हैं और हर नई चीज़ को पुरानी चीज़ के मुक़ाबले में अपनाते हैं लेकिन ऐसा नहीं है कि हमेशा ही ऐसा होता हो बल्कि बहुत सी पुरानी चीज़ों और बातों को हम मानते रहते हैं। मिसाल के तौर पर दो गुणा दो बराबर चार का उसूल जो लाखों हजारों साल से दुनिया में राइज है हम ये कह कर नहीं छोड़ सकते कि ये हज़ारों साल से दुनिया में राइज है अब पुराना हो चुका है उसे छोड़ देना चाहिये, ये भी नहीं कह सकते कि आपसी और समाजी ज़िन्दगी जो अब तक इनसानों के बीच बाक़ी है अब पुरानी हो चुकी हैं अब कोई नया तरीका होना चाहिये और इनसानों को मिल जुल कर ज़िन्दगी गुज़ारने के बजाय अकेले रहना चाहिये। ये नहीं कहा जा सकता कि रहन सहन के क़ानून जो इनसान की बहुत सी निजी आज़ादियों का गला घूँटते हैं क्यों कि वो अब पुराने हो चुके है और लोग उन से तंग आ चुके है इस लिये इस ज़माने में जब कि इनसान बहुत तरक़्क़ी कर चुका हैं और ज़मीन से बहुत ऊपर जा चुका है नए रास्ते बनाना चाहिये। बुनियादी तौर पर नए और पुराने का मसअला उन चीज़ों के बारे में पैदा होता है जो बदलाव की हदों में आती हों और जिन में बदलने की ख़ासियत पाई

जाती हो और उसके नतीजे में एक रोज़ वह ताज़ा हो तो दूसरे दिन बदले हुए हालात में वह पुरानी और मुरझा जाती हों।

हाँ ! ये सवाल भी अपनी जगह पर तअज्जुब से ख़ाली नहीं और इसलाम के सही मानी और मफ़हूम को निगाह में रखते हुए जिस पर कुर्आन की बातें और हुक्म टिके हुए हैं तअज्जुब में डालने वाला है।

क्यों कि इसलाम से मुराद वो रास्ता है जिस की तरफ़ इनसान और कायनात के ख़ालिक़ ने इनसानियत की रहनुमाई की है, वो ऐसे उसूल व क़वानीन हैं जो इनसान की ख़ास फ़ितरत और नेचर के मुताबिक़ हैं। और उससे पूरी तरह मेल खाते हैं। और इनसान की तबीअत और फ़ितरत से पूरी तरह मेल खाने के साथ-साथ उस की सही और सच्ची ज़रूरतों को पूरा करते हैं।

ज़ाहिर सी बात है कि जब तक इनसान इनसान है उस की इनसानी फ़ितरत व आदत जैसी थी वैसी ही रहेगी और इनसान जिस मक़ाम पर भी और जिन हालात में भी ज़िन्दगी बसर करता है अपनी फ़ितरत वाला होता है। फ़ितरत ने उस के क़दमों के सामने एक रास्ता रखा है। इस बात में वह पूरा इख़्तियार रखता है कि उस रास्ते को अपनाए या उसे छोड़े।

इसलाम यानी इनसान के लिये फ़ितरी रास्ता या इनसानी ज़िन्दगी के लिये उसकी हमेशा बाक़ी रहने वाली और सच्ची राह।

कुर्आन के सूरए रुम की आयत नं. 30 में इर्शाद है कि **"आप अपने रुख़ को दीन की तरफ़ रखें और बातिल से अलग रहें कि ये दीन वो इलाही फ़ितरत है जिस पर उसने इनसानों को पैदा किया हैं और इलाही ख़िलक़त, यानी बनावट में कोई तबदीली नहीं हो सकती यक़ीनन यही सीधा और मज़बूत दीन है।"**

हमारे सामने की बात है कि कायनात में पाई जाने वाली अलग-अलग तरह की अपनी अपनी ख़ास ज़िन्दगी है। और उस ज़िन्दगी का अलग एक रास्ता है वो इस रास्ते पर एक मालूम मन्ज़िल की तरफ़ आगे बढ़ रही है। खुशक़िसमती और नेकी ये समझी जाती है कि वो अपनी मख़सूस राह पर चलते हुए रुकावटों से बच कर अपनी मन्ज़िल पर पहुँच जाए। दूसरे लफ़्ज़ों में वो उन चीज़ों के साथ जो उन के वुजूद को दी गई है अपने को बाक़ी रखें और ज़िन्दगी की राह को बग़ैर किसी रुकावट के तय करें और अपनी मन्ज़िल तक पहुँच जाएँ।

गेहूँ के दाने का अपनी नबाताती या बनस्पतिक राह पर मख़सूस रास्ता होता है और वो अपने वुजूद में पाए जाने वाले ख़ास निज़ाम या सेस्टम के ज़रीए जो मख़सूस हालात में काम करता है अपने पौधे को पालने और बढ़ाने के लिये ज़रूरी चीज़ों को अपने अन्दर लेकर खर्च करता है और एक ख़ास तरह से गेहूँ के पौधे की उसकी मन्ज़िल तक पहुँचने की तरफ़ रहनुमाई करता है। गेहूँ का पौधा अपने मख़सूस रास्ते को जो उसने अपने भीतरी और बाहरी चीजों से अपनाया होता है कभी नहीं छोड़ता। मिसाल के तौर पर कभी ये नहीं होता कि वो अपनी तरक़्क़ी की राह पर कुछ दूर चलने के बाद अचानक सेब की ज़िन्दगी के रास्ते पर चल पड़े और उसमें शाखें और तना पैदा हो जाए और पत्ते कलियाँ खिलने लगें। या वह चिड़या बन जाए और उस में चोंच व पर निकल आएँ और वो उड़ने लगे। ये क़ायदा कायनात की तमाम पैदा होने वाली चीज़ों में जारी है और इनसान भी इस क़ानून से अलग नहीं है।

इनसान की भी अपनी ज़िन्दगी में एक फ़ितरी, नेचुरल राह है और वो एक ऐसी जगह पहुँचना चाहता है जो उस का कमाल व नेकी और खुश क़िसमती है। इनसान को भी ऐसी चीज़ें दी गई हैं जो उस के फ़ितरी रासते को मुअय्यन करती हैं और उसकी सही फ़ायदे की तरफ़ रहनुमाई करती है। अल्लाह ने वो हिदायत जो आम तौर पर तमाम पैदा होने वाली चीजों को दी है उस की दो बातों की तरफ़ इशारा करते हुए इर्शाद फ़रमाया है।

"खुदा वो है जिस ने हर चीज़ को उस की मुनासिब बनावट दी है और फिर उस की रहनुमाई भी की है। (सूरए ताहा आयत पचास)

और इसी खुसूसी हिदायत की तारीफ़ करते हुए जो इनसान में जारी है फ़रमाता है

"और नफ़्स की क़सम और जिसने उसे बनाया है फिर बुराई और परहेज़गारी की हिदायत दी है। बेशक वो कामियाब हुआ जिस ने अपने नफ़्स की रहनुमाई और सही देख भाल की। और उसे कुछ न मिला जिसने इसे गुनाहों से भर दिया। (सूरए शम्स आयत सात से दस)

इस बयान से साफ़ मालूम हो जाता है कि इनसानी ज़िन्दगी की सच्ची राह जो उसे नेकी और खुश क़िसमती तक ले जाती है वह राह है जिस की तरफ़ फ़ितरत व तबीयत उस की हिदायत

रती है और इस रास्ते की बुनियाद न सच्ची मसलहतों और फ़ायदों की नियाद पर रखी गई है जो इनसान और यनात के तक़ाज़ों के मुताबिक़ हैं। चाहे जज़बाती एहसास और ख़ाहिश के ताबिक़ हो या न हों। क्योंकि इनसान अपनी चाहतों और ख़ाहिशों और हसास में अपनी फ़ितरत के रास्ते पर लना चाहिये ऐसा न होने पाए कि तरत इन के रास्ते पर चल पड़े।

इनसानी समाज को अपनी ज़िन्दगी की बुनियाद सच्चाई पर रखना चाहिये न कि बेजा और खुराफ़ात की लड़खड़ाती डगमगाती बुनियादों पर और चाहतों और ख़ाहिशों के धोखा देने वाले ख़यालात पर। और यही इसलाम और दूसरे सिविल क़ानून का फ़र्क़ है। क्यों कि आम तौर पर समाजी क़ानून अकसरीयत की ख़ाहिश के मुताबिक बनाए जाते हैं लेकिन इसलामी कानून तबीयत और फ़ितरत के मुताबिक़ होता हैं जो खुदा के इरादे को ज़ाहिर करता है और यही वो मक़ाम है जहाँ कुर्आने करीम हुक्म देने और क़ानून बनाने का हक़ सिर्फ़ खुदा को देता है जैसा कि इर्शाद है कि

"हुक्म करने का हक़ सिर्फ़ खुदा को है" (सूरए यूसुफ़ आयत पचास)

आमतौर पर इनसानी समाज में जो चीज़ हुकूमत करती है वो या तो अकसरियत की ख़ाहिशें होती हैं या किसी बेलगाम हाकिम की मर्ज़ी। चाहे ये हक़ व हक़ीक़त के मुताबिक़ हों और समाज को सही फ़ायदा पहुँचाने वाली हो या इस के ख़िलाफ़ हों। लेकिन एक इसलामी समाज में हक व हक़ीक़त की हुकूमत होती है और ज़रूरी होता है कि लोगों की ख़ाहिशें इसके पीछे चलें।

इसलाम इनसानी ख़ाहिशें का पाबन्द नहीं। वह समाज जो आज मुकम्मल आज़ादी से ज़िन्दगी गुज़ारते हैं और हर मैदान में कामियाबी हासिल कर रहे हैं हरगिज़ इन पाबन्दियों को कुबूल करने पर तैयार न होंगे जो इसलाम उनके लिये पेश करता है।

अलबत्ता अगर इनसानियत की मौजूदा सूरते हाल में जब कि अख़लाक़ी गिरावट ने हर हिस्से में रुकावट खड़ी कर दी है और जो हर तरह की बेलगाम आज़ादी और जुल्म से भरी हुई है और हर वक़्त गिरावट और बर्बादी का उस के लिये ख़तरा है। अगर इस की बराबरी इसलाम से की जाय तो रौशन और बा-रौनक़ इसलाम और इस सर से पैर तक अँधेरें में

डूबी हुई इन्सानियत में किसी क़िस्म का तालमेल नहीं पाएँगे। और ये उम्मीद भी नहीं रखनी चाहिये कि मौजूदा सूरते हाल में यहाँ इसलाम का क़ानून जारी करके यानी कुछ इसलामी अहकाम को लागू कर के इनसानियत को पूरी तरह नेकियों तक लाया जा सकता है। ये बिलकुल उसी तरह है जैसे कोई ज़ोर ज़बरदस्ती और डिक्टेटराना माहौल की हुकूमत को सिर्फ़ बरायनाम जमहूरियत का नाम देकर सही जमहूरियत और आज़ादी के फ़ायदों की उम्मीद रखे। या कोई बीमार अपने इलाज के लिये डाक्टर के लिखे हुए नुसख़े को सिर्फ़ देखने हीको काफ़ी समझे और अपने ठीक हो जाने के इन्तिज़ार में रहे। लेकिन अगर सिर्फ़ लोगों की अस्ल फ़ितरत का इसलाम से जो दीने फ़ितरत है बराबरी की जाए तो उनके दरमियान काफ़ी यकसानियत और तालमेल नज़र आएगा।

अलबत्ता इस टकराव और ग़लत सोच की वजह से जो आज के लोगों की बेलगामी और लाउबालीपन के असर से फ़ितरत और तबीयत में और इनसान के मौजूदा तौर तरीक़ों के बीच रिश्ता टूट चुका है। लेकिन इस माहौल और बिगड़े हुए हालात में भी अक़्लमन्दी का रास्ता यही है कि इस हालत से लड़ा जाए ताकि मैदान साफ हो न ये कि नाउम्मीद हो कर आँखें बन्द कर ली जाएँ।

तारीख़ की गवाही भी है कि हर नए तौर तरीक़े और रहन सहन के ढंग को समाज में जारी करने के लिये शुरू में सख़्त मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। और एक लम्बी खीचतान के बाद जो अकसर ख़ूनी भी होती है उनके लिये समाज में दाखिल होने का दरवाज़ा खुल जाता है। और फिर धीरे धीरे पिछले तौर तरीक़े लोगों के ज़हनों से निकल जाते हैं। जमहूरियत, आज़ादी की हुकूमत जो उसके मानने वालों के अकीदे के मुताबिक़ लोगों की ख़ाहिशों से मेल खाती हुई है। इसे भी फ्रांस और दूसरे मुल्कों में ख़ूनी हादिसों का सामना करना पड़ा। इसी तरह कम्यूनिज़्म ने जो उस के तरफ़दारों के नज़दीक तारीख़ का एक बहुत बड़ा तोहफ़ा है शुरू में रूस में और उसके बाद एशिया के दूसरे हिस्सों और यूरोप और अमरीका में लाखों करोड़ों लोगों के अपने ख़ून में लोटने के बाद ठहराव पाया है।

इसलिये समाज का शुरू में किसी तौर तरीक़ों और क़ानून से नाराज़ होना और उस से टकराना उस के ख़राब होने की दलील नहीं है।

इसलाम हर हाल में ज़िन्दा है और समाज में अपने क़ानून को लागू करने की सलाहियत रखता है।□□

तौहीद

ज़ाइर अब्बास

तौहीद इस का रूट लफ़्ज़ यानी जिस लफ़्ज़ से ये लफ़्ज़ निकला है वह है "वहदत"।

वहदत का मतलब है यकताई। खुदा एक है यकता है कोई उसके किसी काम में शरीक नहीं अगर उस के अलावा कोई दूसरा खुदा होता तो वह भी अपने को पहचनवाता अपना क़ानून अपनी बातें अपने पैग़म्बरों और नबीयों के ज़रीएलोगों की तरफ़ भेजता मौला अली अ० नहजुल बलाग़ा के खुत्बा नं० एक में फ़रमाते हैं कि "दीन की शुरूआत खुदा की मारिफ़त है। और मारिफ़त का कमाल उस के एक होने का इक़रार है। और उस की यकताई और एक होने का कमाल ये है कि उस के सिफ़ात हई और क़य्यूम ज़िन्दा और बाक़ी रहने को उस की ज़ात से अलग न समझे क्योंकि ज़ात और सिफ़ात के अलग-अलग होने से यकताई बाक़ी नहीं रहती।"

जमल की जंग के मौके पर एक आराबी हज़रत अली अ० की खिदमत में आया और सवाल किया कि खुदा के 'वाहिद' होने के क्या मानी है? लोगों ने कहा कि ये जंग ओर परेशानी का मौक़ा है सवाल करने का मौक़ा नहीं है। इमाम ने फ़रमाया कि इसे न रोको चूँकि हमारी जंग भी इसी मक़सद के लिये है कि लोगों से तौहीद का इक़रार ले उसे मनवाएँ। फिर आपने फ़रमाया कि "वह ऐसा एक है जिस का कोई दूसरा नहीं है। वह अपने कमालात में यकता है कोई उस के जैसा नहीं है न कोई उस का शरीक है। वह ऐसा एक है कि उस को बाँटा नहीं जा सकता उस के हिस्से नहीं किये जा सकते वह हर एतेबार से एक है। अपनी तमाम ख़ाहिशों की पैरवी और उन को मान लेना भी तौहीदे खुदा के ख़िलाफ़ है। जैसा कि सूरए जासिया आयत नं. तेईस में इर्शाद है कि "तुम ने उस शख़्स को देखा जिस ने अपनी ख़ाहिश को खुदा बना रखा है।"

अल्लाह को एक मानने का मतलब ये है कि हर निज़ाम और हर नज़रिये से मुँह मोड़ कर सिर्फ़ अल्लाह के क़ायम किये हुए निज़ाम और क़ानून को मानना।

अल्लाह को एक मानने का मतलब ये भी है कि किसी ऐसे आदमी की इताअत न करना जिस का हुक्म हुक्मे खुदा से टकरा रहा हो।

तौहीद के इक़रार का मतलब ऐसे लोगों की रहबरी व इमामत को कुबूल करना जिन को अल्लाह ने रहबर बनाया है।

तौहीद के इक़रार के बाद सारे बुत चाहे वो अन्दर के हो या बाहर के नाम का बुत, इज़्ज़त का बुत, दौलत का बुत, ओहदे और मनसब का बुत, हर बुत को तोड़के सिर्फ़ अल्लाह के हो जाना और अपने क़ौल व अमल से इस बात का एलान करना कि मेरी नमाज़, मेरी कुर्बानियाँ मेरी ज़िन्दगी, मेरी मौत सब अल्लाह के लिये है। तौहीद के इक़रार का लाज़िमी नतीजा यह भी होना चाहिये कि दिल के किसी गोशे में खुदग़र्ज़ी, बुग्ज़, हसद, दूसरों के हक़ को पामाल करने का जज़्बा पैदा न होने पाए।

"अल्लाह के एक होने की दलील"

एक इमारत के मुख़्तलिफ़ हिस्सों, एक किताब में लिखी हुई बातों और एक ख़त की सतरों और लाइनों की यकसानियत और एक जैसा होना इस बात की दलील है कि इन्हें बनाने वाला या लिखने वाला एक है। अगर तीन तसवीर बनाने वालों को एक मुर्गे की तसवीर बनाने को कहा जाय लेकिन किसी से पैर बनवाए जाएँ किसी से पेट और किसी से सर। फिर इन तीनों को जोड़ दिया जाय तो एक हिस्सा दूसरे हिस्से से मेल नहीं खाएगा कोई बड़ा होगा कोई छोटा। इस कायनात के हर जिस्म में हर हिस्से का दूसरे हिस्से से मिलान और पूरी कायनात का एक ढर्रे एक साँचे एक दूसरे से पूरी हम आहंगी मिलान बताता है कि खुदा एक है।

जो इस दुनियामें माँ के पेट से बच्चा पैदा करता है वही उस बच्चे के मिज़ाज के मुताबिक़ उस के लिये माँ के सीने में दूध भी जारी करता है।

सूरज रोशनी नीचे फेंकता है, समन्दरों से भाप ऊपर जाती है ज़मीन की कशिश उसे फिर नीचे ले आती है।

दरख़्तों की जड़ें, उन जड़ों से दरख़्त को मिलती हुआ ग़िज़ा, शाखें, फल और फूल, हर एक का दूसरे से एक रिश्ता और लगाव ये सारी बातें बताती हैं कि कोई लामहदूद कूवत व ताक़त व कुदरत रखने वाली ज़ात मौजूद है। सब उसी का बनाया हुआ है।❑❑

मोमिन को नेकियों का हुक्म दिया जाए और बुराईयों से रोका जाए ताकि नसीहत हासिल करे या जाहिल को किया जाए ताकि इल्म हासिल करे वरना लाठी डन्डे वाले को नेकियों का हुक्म देना और बुराईयों से रोकना बिलकुल बेकार है।

(इमाम सादिक़ अ०)

जनाब ख़दीजा का अक़्द

ज़ैग़म अब्बास

रसूलुल्लाह हज़रत मुहम्मद मुसतफ़ा स० की उम्र जब पच्चीस साल की हुई और आप का बेहतरीन किरदार, सच्चाई और ईमानदारी चारों तरफ़ मश्हूर हो गई और आप को सादिक़ यानी सच्चा और अमीन यानी अमानत दार कहा जाने लगा तो जनाबे ख़दीजा की तरफ़ से पैग़म्बर स० के यहाँ शादी का पैग़ाम आया। हज़रत ख़दीजा जो खुवैलिद की बेटी थीं इसी लिये ख़दीजा बिन्ते खुवैलिद कहलाती हैं बहुत ही पाकीज़ा नफ़्स, खुश अख़लाक़ और कुरैश के ख़ानदान में सब से ज़ियादा दौलत मन्द थीं। पैग़ाम मन्ज़ूर हो गया। हज़रत अबूतालिबने निकाह पढ़ा। इब्ने वाज़ेह ने लिखा है कि निकाह का खुत्बा हज़रत अबू तालिबने पढ़ा था उस की शुरूआत इस तरह थी"तमाम तारीफ़ें उस एक और अकेले खुदा के लिये हैं जिसने हमें नस्ले इब्राहीम और औलादे इस्माईल में रखा"। तारीख़ लिखने वालों का बयान ये भी है कि हज़रत ख़दीजा का जो मह्र था वह हज़रत अबू तालिब ने उसी वक़्त अदा कर दिया। हज़रत ख़दीजा की तरफ़ से अक़्द पढ़ने वाले उन के चचा अम्र बिन असद और हज़रत रसूले खुदा की तरफ़ से हज़रत अबू तालिब थे। शादी के वक़्त हज़रत ख़दीजा की उम्र के बारे में इख़्तिलाफ़ है। सीरतुन्नबी नाम की किताब में शिबली नोमानी ने लिखा है कि उनकी उम्र चालीस साल की थी। मनाक़िब इबने शहर आशोब नाम की किताब मे है कि रसूले खुदा स० के साथ हज़रत ख़दीजा का ये पहला अक़्द था। सीरत इब्ने हिशाम में है कि जब तक हज़रत खदीजा ज़िन्दा रहीं रसूले करीम ने कोई अक़्द नहीं किया। हज़रत ख़दीजा का अक़्द रसूललुल्लाह स० से दसरबीउल अव्वल को हुआ था।

- जुमअः जुमअः नाखुन काटना और मूँछे तराशना कोढ़ से बचने का बेहतरीन ज़रीअः है।
- इससे ज़ियादा तअज्जुब वाली बात क्या है कि इन्सान खुदा का रिज़्क खा कर उससे बगावत करे और उसके मुकाबिले में खुदाई का दावा कर दे और फिर भी खुदा उससे इन्तिकाम न ले।

इमाम सदिक़ अ०

पैग़म्बरे इसलाम हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा स0 के खानदानी हालात

गुलाम महदी मौलाई

रसूलुल्लाह स० हज़रत इब्राहीम अ० की नस्ल से थे। हज़रत इब्राहीम की एक बीवी थीं जनाब हाजिरा जिन से हज़रत इस्माईल पैदा हुए और दूसरी बीवी थीं सारा। हज़रत इब्राहीम ने सारा को हज़रत इसहाक़ के साथ शाम में छोड़ा और हज़रत हाजिरा को हज़रत इसमाईल के साथ मक्का अल्लाह के हुक्म से पहुँचाया। और खुद वापस गए। हज़रत इसहाक़ की शादी शाम में और हज़रत इसमाईल की शादी मक्के में जरहम क़बीले की एक लड़की से हुई। इस तरह हज़रत इसहाक़ की नस्ल शाम में और हज़रत इसमाईल की नस्ल मक्के में बढ़ी। जब हज़रत इब्राहीम हज़रत हाजिरा के इन्तिक़ाल के बाद मक्के आए तो आप ने हज़रत इसमाईल की मदद से खानए काबा को बनाया हज़रत इब्राहीम ने एक सौ पचहत्तर साल की उम्र में इन्तिक़ाल फ़रमाया वफ़ात से पहले आपने अपना जानशीन हज़रत इसमाईल को बनाया। हज़रत इसमाईल ही वो हैं कि जिन की वजह से मक्का आबाद हुआ, ज़म ज़म का कुँआ निकला, हज की शुरूआत हुई, दसवीं ज़िलहिज को कुरबानी की ईद की सुन्नत जारी हुई। आप का इन्तिकाल एक सौ सैंतीस साल की उम्र में हुआ और आप हिज्रे इसमाईल मे मक्के में काबे के क़रीब दफ़्न हुए। आप की वफ़ात के बाद खानए काबा की निगरानी और ख़िदमत आप के बेटे करते रहे। इन बेटों में क़ीदार को नुमायाँ हैसीयत हासिल थी। हज़रत इसमाईल की नस्ल मक्के में बढ़ती रही यहाँ तक कि इसी नस्ल में एक फ़हर नाम के पैदा हुए जो बहुत ही कमाल वाले थे। अल्लामा तुरैही का कहना है कि इन्हीं फ़हर या इन के दादा नज़्रबिन कनाना को कुरैश कहा जाता है। फ़हर की नस्ल मे आगे चल कर एक बुज़ुर्ग हुए जिन का नाम कुसई था। यह बहुत ही शान वाले हिम्मत वाले बुज़ुर्ग थे। नेक किरदार, मुरूवत वाले, बहादुर और सख़ी थे। इन्होंने ख़ानए काबा की मरम्मत करवाई आमलोगों के लिये काफ़ी काम किये। मक्के में कुआँ खुदवाया। इन के 6 बेटे थे जिनमें अब्दुद्दार सब से बड़े और

अब्दे मनाफ़ सब से लायक़ थे। अब्दे मनाफ़ अपनी लियाकत से कुरैश के सरदार हो गए। अब्दे मनाफ़ की बीवी का नाम आतिका था। इन से हाशिम पैदा हुए हाशिम बहुत ही बाँट चोंट करने वाले फय्याज़ थे। दौलत मन्द थे। हाजियों की ख़िदमत आप की ज़िन्दगी का कारनामा था। मश्हूर ये है कि आप को हाशिम इस लिये कहा जाता है कि आप ने एक बहुत ही सूखे के ज़माने में अपनी जाती दौलत से शाम जाकर बहुत काफ़ी खाने का सामान ख़रीदा और उसे लाकर तक़सीम करते हुए कहा कि इसे शोरबे में तोड़ कर खा जाओ। हश्म के मानी तोड़ने के हैं इस लिये हाशिम कहे जाने लगे वरना इन का नाम अम्र और कुन्नियत अबू नफ़ला थी। आप ने एक शादी आपने ख़ानदान की एक लड़की से की जिस से असद पैदा हुए। दूसरी शादी मदीने के मश्हूर क़बीले बनी अदी की लड़की से की जिन से हज़रत अब्दुल मुत्तलिब पैदा हुए। हज़रत अब्दुल मुत्तलिब के बचपन के ज़माने में ही हज़रत हाशिम का इन्तिक़ाल हो गया। हज़रत असद की बेटी फ़ातिमा थीं जो फ़ातिमा बिन्ते असद कही जाती हैं और ये असद हज़रत अली अ० के नाना थे। हज़रत अब्दुल मुत्तलिब हज़रत हाशिम के बहुत ही कदरो मन्ज़िलत और इज़्ज़त वाले बेटे थे। चूँकि इन के बाप हज़रत हाशिम का इन्तिकाल इन के बचपन के ज़माने में ही हो चुका था इस लिये इन की परवरिश इन के चचा मुत्तलिब ने की। हज़रत अब्दुल मुत्तलिब की माँ सलमा भी शराफ़त और अज़मत वाली थीं। अपने बाप हज़रत हाशिम की तरह हज़रत अब्दुल मुत्तलिब भी मश्हूर थे। शराब अपने ऊपर हराम कर रखी थी। ग़ारे हिरा में बैठ कर इबादत करते थे। लोगों को खाना ख़िलाते थे मुसीबत के मारे हुओं की मदद, अपाहिजों की ख़बर गीरी इन का ख़ास तरीक़ा था। आपने कुछ ऐसे तरीक़े भी राइज किये जो बाद में मज़हबी नुक़तए नज़र से इनसानी ज़िन्दगी के उसूल बन गए। मसलन नज़्र का पुरा करना, महरम औरतों से निकाह से परहेज़, बेटियों को मार डालने की मनाही, शराब और ज़िना का हराम करना चोर के हाथ काटना। चाहे ज़मज़म जो एक ज़माने से बन्द हो चुका था फिर खुदवाकर जारी किया। आप ही के ज़माने का मश्हूर वाक़िआ है कि अबरहतुल अश्रम यमन

का ईसाई बादशाह था। उस में मज़हबी तअस्सुब बहुत था। ख़ानए काबा की अज़मत व हुरमत देख कर हसद की आग से भड़क उठाऔर काबे के मरतबे और दर्जे को घटाने के लिये सुनआ के मक़ाम पर उसने एक अज़ीमुश्शान गिरजा बनवाया। फिर भी लोगों की नज़र में काबे वाली अज़मत न पैदा हो सकी तो उस ने काबे को गिरा देने का फैसला किया और असवद बिन मक़सूद हबशी की सरदारी में एक बहुत बड़ा लश्कर मक्के की तरफ़ रवाना किया। क़ुरैश, कनाना, खुज़ाआ और हज़ील क़बीले के लोग पहले तो लड़ने के लिए तैयार हुए लेकिन लश्कर की कसरत देख कर हिम्मत हार बैठे और मक्के की पहाड़ियों में अपने बाल बच्चों समेत जा छुपें अलबत्ता अब्दुल मुत्तलिब अपने कुछ साथियों के साथ ख़ानए काबा के दरवाजे मे जा खड़े हुए और कहा मालिक तेरा घर है और सिर्फ़ तू ही बचाने वाला है। इसी बीच लश्कर के सरदार ने मक्के वालों की ज़मीन से कुछ मवेशी पकड़े जिन में हज़रत अब्दुल मुत्तलिब के दो सौ ऊँट भी थे। अबरहाने हिनात हमीरी को मक्के वालों के पास भेजा और कहा कि हम तुम से लड़ने नहीं आए। हमारा इरादा सिर्फ़ काबा ढाने का है अब्दुल मुत्तलिब ने पैग़ाम का ये जवाब दिया कि हमें भी लड़ना नहीं है और इसके बाद अब्दुल मुत्तलिब ने अबरहा से मिलने की दरख़ास्त की उस ने इजाज़त दी। अब्दुल मुत्तलिब उसके दरबार मे दाखिल हुए। अबरहा बहुत ही क़ायदे से मिला और इन का इस्तेक़बाल किया और इन के साथ तख्त से उतर कर फ़र्श पर बैठा। अब्दुल मुत्तलिब ने बातों के बीच अपने ऊँटों के छोड़ देने की बात कही। उस ने कहा तुम ने अपने बाप दादा के मकान के लिये कुछ न कहा। उन्हों ने जवाब दिया मै ऊँटों का मालिक हूँ अपने ऊँट माँगता हूँ जो काबे का मालिक है अपने घर को खुद बचायेगा। हज़रत अब्दुल मुत्तलिब को उन के ऊँट मिल गए और वह वापस आ गए और क़ुरैश को पहाड़ियों पर भेज कर खुद वहीं ठहर गए। अबरहा अपने लश्कर को लेकर ख़ानए काबा की तरफ बढ़ा और जब उस की दीवारें नज़र आने लगीं तो धावा बोल देने का हुक्म दे दिया जैसे ही अब रहा के लश्कर ने आगे बढ़ना शुरू किया तो मक्के के पच्छिम से छोटे छोटे परिन्दों का झुण्ड आया उन परिन्दों की चोंच और पन्जों में एक एक कंकरी थी।

उन्हों ने ये कंकरियाँ अबरहा के लश्कर पर बरसाना शुरू कीं। सारे का सारा लश्कर ख़त्म हो गया और कुरआन के एलान के मुताबिक़ चबाए हुए भूसे की तरह हो गया। अबरहा जो महमूद नाम के हाथी पर बैठा था ज़ख्मी हो कर यमन की तरफ़ भागा लेकिन रास्ते ही में वासिले जहन्नम हो गया। चूँकि अबरहा हाथी पर सवार था और अरब ने इस से पहले हाथी न देखा था और इसलिये भी किबड़े बड़े हाथियों को छोटे-छोटे परिन्दों की नन्ही-नन्ही कंकरियों ने तबाह कर के रख दिया इस लिये इस वाकिए को हाथी की तरफ़ मनसूब किया गया और इसी से सन् आमुल फ़ील कहा गया। हज़रत रसूले ख़ुदा स० इसी सन् एक आमुल फील में पैदा हुए। हज़रत अब्दुल मुत्तलिब के चार मश्हूर बेटे हैं इन चार में एक हज़रत अब्दुल्लाह थे जिन की कुन्नियत अबूअहमद थी। इन की वालिदा का नाम फ़ातिमा था जो उमर बिन आयद बिन उमर बिन मखज़ूम की बेटी थीं। हज़रत अब्दुल्लाह ही वह अज़ीमुल मरतबत आदमी हैं जो हमारे रसूल हज़रत मुहम्मद मुसतफ़ा स० के वालिद हैं। आप निहायत ही मतीन, संजीदा और शरीफ़ तबीयत के इनसान थे। ख़ानदानी ऊँचे होने के साथ अच्छे चाल चलन की वजह से तमाम कुरैश के जवानों में इज़्जत की नज़र से देखे जाते थे। हज़रत अब्दुल मुत्तलिब अपने बेटों में सबसे ज़ियादा आप को चाहते थे। आप की शादी जहरा क़बीले में वह्ब इब्ने अब्दे मनाफ़ की बेटी "आमिना" से होगई। शादी के वक़्त हज़रत अब्दुल्लाह की उम्र लगभग अठ्ठारह साल थी। आप ने अठ्ठाइस साल की उम्र में इन्तिकाल फ़रमाया। उस वक़्त रसूलुल्लाह स० अपनी माँ हज़रत आमिना के पेट में थे। हज़रत अब्दुल्लाह मक्के से तिजारत की ग़रज़ से मदीने आए और वहीं आप का इन्तिक़ाल हो गया और आप अबवा में दफ़्न किये गए जिस वक़्त आप का इन्तिकाल हुआ है आप के वालिद हज़रत अब्दुल मुत्तलिब जिन्दा थे। हज़रत अब्दुल्लाह के भाइयों में हज़रत अबूतालिब जिन का नाम इमरान था और जो हज़रत अली अ० के वालिद व रसूलुल्लाह स० की हज़रत अब्दुल मुत्तालिब की वफ़्रत के बाद परवरिश करने वाले थे। हज़रत अबूतालिब के अलावा रसूलुल्लाह स० के एक चचा अब्बास और हज़रत हमज़ा भी है। उलमाए इमामिया का इस बात पर इत्तिफ़्रक़ है कि रसूलुल्लाह स० सत्रह रबीउल अव्वल सन् एक आमुल फ़ील को मक्के में पैदा हुए। ❑❑

सादिक़े आले मुहम्मद हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम

मिर्ज़ा ग़ाज़ी हुसैन

आप सत्रहरबीउल अव्वल सन् तिरासी हिजरी पीर के दिन मदीने में पैदा हुए आप पाँचवें इमाम हज़रत मु० बाकिर अ० के बेटे थे आपकी माँ उम्मेफरवा बिन्ते क़ासिम बिन मुहम्मद बिन अबीबक्र थीं। सत्रह रबीउल अव्वल की तारीख़ में दोहरी बरकतें इस लिये हैं कि यही तारीख़ रसूलुल्लाह स० की विलादत की भी तारीख़ है। इसीलिये ये तारीख बहुत ही शरफ़ वाली तारीख़ है। सत्रह रबीउल अव्वल के कुछ आमाल किताबों में लिखे हुए हैं। यहाँ पर शेख अब्बास कुम्मी र० अ० की किताब मफ़ातीहुल जिनान से दिया जा रहा है।

1.ग़ुस्ल करे (नीयत ये होगी कि गुस्ल करता हूँ कुरबतन इलल्लाह फ़िर जो गुस्ल का तरीक़ा है उसी तरीके से गुस्ल करे पहले सर और गर्दन धोए फिर पूरा दाहिना हिस्सा काँधे से पैर के तलवे तक फिर बाँया हिस्सा काँधे से पैर के तलवे तक। इस तरह गुस्ल पूरा हो गया। अगर हौज़ या तालाब या दरिया में गुस्ल कर रहा है तो नीयत के बाद एक डुबकी लगाए और पानी के अन्दर ही पैरों को थोड़ा सा उठाले। बस गुस्ल पूरा हो गया।

2- रोज़ा रखे

3- रसूलुल्लाह स० की ज़ियारत पढ़े।

4- हज़रत अली अ० की ज़ियारत पढ़े

5-जब दिन चढ़ जाए तो दो रकअत नमाज़ पढ़े। हर रकअत में सूरए हम्द के बाद दस मरतबा इन्नाअनज़लनाहु का पूरा सूरा और दस मरतबा सूरए कुलहुवल्लाह का पूरा सूरा पढ़े।

6.मुसलमान इस दिन की ताज़ीम करें। सदक़ा और ख़ैरात दें और मोमिनीन को खुश करें।

नोट-:अगर कोई शख़्स यह सारे आमाल बजा लाता है तो क्या कहना, सुब्हानल्लाह वरना जितना कर सकता हो उतना कर सकता है अगर कोई सिर्फ एक ही अमल इन आमाल में से करता है मसलन सिर्फ नमाज़ पढ़ लेता है तो उसे इस अमल का सवाब मिलेगा

सारे आमाल का करना कोई ज़रूरी नहीं है। हज़रत इमाम जाफ़र सादिक अ० की कुन्नियत अबूअब्दिल्लाह अबू इसमाईल थी। आप के अलक़ाब सादिक़ साबिर, फ़ाज़िल, ताहिर वग़ैरा हैं। आप की विलादत जब हुई है उस वक़्त अब्दुल मलिक बिन मरवान बादशाह था इस के बाद वलीद बिन अब्दुल मलिक बादशाह हुआ वलीद के बाद सुलैमान बिन अब्दुल मलिक और सुलैमान के बाद उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ और इस के बाद यज़ीद बिन अब्दुल मलिक इसके बाद हिशाम बिन अब्दुल मलिक इस के बाद वलीद बिन यज़ीद बिन अब्दुल मलिक इसके बाद यज़ीदुन्नाक़िस इसके बाद इब्राहीम बिन वलीद और इब्राहीम बिन वलीद के बाद मरवानुलहिमार एक के बाद एक बादशाह हुए मरवानुल हिमार के बाद बनी उमय्या की हुकूमत ख़त्म हो गई और बनी अब्बास ने हुकूमत पर क़ब्ज़ा कर लिया। बनी अब्बास का पहला बादशाह अबुल अब्बास सफ़्फ़ाह और दूसरा मंसूर दवानिक़ी था। इसी मंसूर ने अपनी हुकूमत के दो साल गुज़रने के बाद इमाम जाफ़र सादिक़ अ० को ज़हर से शहीद कर दिया। इमाम जाफ़र सादिक अ० के ज़माने में एक लामज़हब नास्तिक था जिस का नाम अबूशाकिर देसानी था एक दिन इमाम अ० से कहने लगा कि क्या आप खुदा को पहचान सकते हैं और उस की तरफ़ मेरी रहनुमाई कर सकते हैं। आप ने एक मोर का अण्डा हाथ मे लेकर फ़रमाया देखो! इस की ऊपरी बनावट पर ग़ौर करो और अन्दर की बहती हुई ज़र्दी और सफ़ेदी को ग़ौर से देखो और इस पर तवज्जोह दो कि इस में रंग बिरंग के तायर कैसे पैदा हो जाते हैं क्या तुम्हारी अक़्ल इस को नहीं मानती कि इस अण्डे का अछूते अंदाज़ में बनाने वाला और उससे पैदा करने वाला कोई है। ये सुनकर वो ख़ामोश हो गया और खुदा को मान गया। इसी देसानी ने एक बार छठे इमाम अ० के शागिर्द हिशाम बिन हकम के ज़रीए से सवाल किया कि क्या ये मुमकिन है कि खुदा सारी दुनिया को एक अण्डे में समोदे और न अण्डा बढ़े न दुनिया घटे आप ने फ़रमाया बेशक वोहर चीज़ पर क़ादिर है उस ने कहा कोई मिसाल तो आप ने फ़रमाया कि मिसाल के लिये आँख की छोटी पुतली काफ़ी है इस में सारी दुनिया समा जाती है न पुतली बढ़ती है न दुनिया घटती है।□□

इमाम जाफ़र सादिक़ अ० के अख़लाक़ की एक झलक

आबिद जलाल पुरी

अल्लामा इब्ने शहर आशोब लिखते हैं कि एक दिन हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ अ० ने अपने एक ग़ुलाम को किसी काम से बाज़ार भेजा जब उसकी वापसी में बहुत देर हुई तो आप उस को तलाश करने के लिये निकल पड़े देखा एक जगह लेटा हुआ सो रहा है। आप उसे जगाने के बजाय उस के सरहाने बैठ गए और पंखा झलने लगे। जब वह जागा तो आपने फ़रमाया! ये तरीक़ा अच्छा नहीं है रात सोने के लिये और दिन काम काज के लिये है फिर कभी ऐसा न करना। एक बार आप के वकील मअक़ब ने कहा कि हमें इस मँहगाई और सूखे की तकलीफ़ का कोई ख़तरा नहीं है। हमारे पास इतना ग़ल्लामौजूद है जो बहुत दिनों तक के लिये काफ़ी होगा। हज़रत ने फ़रमाया ये तमाम ग़ल्ला बेच डालो इस के बाद जो सब का हाल होगा वही हमारा भी होगा। जब ग़ल्ला बेच दिया गया तो फ़रमाया अब ख़ालिस गेहूँ की रोटी न पका करे बल्कि आधे गेहूँ और आधे जौ की पकाई जाए जहाँ तक मुम्किन हो हमें ग़रीबों का साथ देना चाहिये। आप का क़ायदा था कि आप मालदारों से ज़ियादा ग़रीबों की इज़्जत करते थे। मज़दूरों की बड़ी क़द्र फ़रमाते थे। ख़ुद भी तिजारत फ़रमाते थे और अकसर अपने बाग़ों में ख़ुद मेहनत भी करते थे। एक मरतबा आप बेलचा हाथ में लिये हुए बाग में काम कर रहे थे और पसीने से तमाम जिस्म तर हो गया था। किसी ने कहा ये बेलचा मुझे दे दीजिये कि मैं ये काम कर दूँ। आप ने फ़रमाया कि रोज़ी की तलाश में धूप और गर्मी की तकलीफ़ सहना ऐब की बात नहीं है। ग़ुलामों और कनीजों पर वही मेहरबानी रहती थी जो आप के घराने का दस्तूर था। आप की आदतों में इमाम हुसैन अ० की ज़ियारत के लिए जाना दाख़िल था आप सफ़्फ़ाह बादशाह के ज़माने में और मनसूर बादशाह के दौर में भी जियारत के लिय तशरीफ़ ले गए थे। कर्बला की आबादी से लगभग चार सौ क़दम उत्तर की तरफ़ नहर के किनारे बागों मे शरीअए सादिके आलेमुहम्मद अ० उसी ज़माने से बना हुआ है।❑

शीअः कौन?

इहतिशाम रिज़ा नक़वी

हुज़ूर मुरसल-ए-आज़म स० का मशहूर इरशाद है कि "ऐ अली तुम और तुम्हारे शीअः कामियाब हैं।"

सवाल ये पैदा होता है कि ये शीअः कौन हैं? शीओं की पहचान क्या है? उन की अच्छाईयाँ क्या हैं?

ज़ाहिर है कि इसका सहीह जवाब वही लोग दे सकते हैं जिन की तरफ़ मनसूब हो कर शीअः, शीअः कहलाते हैं। नीचे हम रसूल-ए-इसलाम स० और इमाम जाफ़र सादिक़ अ० की कही हुई बातों की रोशनी में शीओं की कुछ अच्छाईयों का ज़िक्र कर रहे हैं ताकि मालूम हो जाए कि सच्चा और सहीह शीअः कौन है?

1. परहेज़गार– जब रूसल-ए-इसलाम ने मक्का फ़त्ह कर लिया तो सफ़ा की पहाड़ी पर खड़े हो कर फ़रमाया! ऐ बनी हाशिम और बनी अब्दुल मुत्तलिब! मैं खुदा का रसूल हूँ तुम से प्यार करने वाला और तुम पर मेहरबान हूँ तुम न कहो कि मैं तुम जैसा हूँ। खुदा की क़सम तुम्हारे और तुम्हारे ग़ैर के बीच मेरा शीअः वही है जो परहेज़गार हो।

2. वफ़ादार व अमानतदार– छठे इमाम ने फ़रमाया! हमारे शीअः अल्लाह की इबादत में कोशिक करने वाले, वफ़ादार होते हैं।

3. रातों को इबादत करने वाले– हमारे शीअः आबिद व ज़ाहिद रात दिन में इक्कियावन रकअत नमाज़ पढ़ने वाले, रातों को इबादत करने वाले, दिन को रोज़ा रखने वाले, अपने माल में ज़कात देने वाले, हज करने वाले और हराम चीज़ों से बचने वाले होते हैं। (इमाम जाफ़र सादिक़ अ०)

4. पाक दामन और मोहतात– इमाम जाफ़र सादिक़ अ० फ़रमाते हैं "जाफ़र" के शीअः सिर्फ़ वह हैं जो अपने पेट को हराम से बचाने वाले और पाक दामन व मोहतात होते हैं। अल्लाह की राह में कोशिश करते हैं उस से सवाब की उम्मीद रखते हैं और अज़ाब से डरते रहते हैं। तो तुम जब ऐसे लोगों को देखो तो समझ लो कि यही हमारे शीअः हैं।

5. हमदर्द– मुहम्मद बिन अजलान कहते हैं कि एक शख़्स इमाम जाफ़र

हिजरत क्यों?

मु० आरिफ़ रिज़वी

हिजरत के मानी अपना वतन छोड़ देने के हैं लेकिन आम तौर से हिजरत से मुराद रसूल-ए-इसलाम का वह सफ़र है कि जो आप ने मक्के से मदीने की तरफ़ किया था। हिजरत एक अच्छा अमल और बेहतरीन बात है। इसी लिये मासूमीन अ० ने इस का हुक्म दिया है। **"ऐ लोगो हिजरत करो और इसलाम से जा मिलो"**

(मीज़ानुल हिकमः)

यहाँ हिजरत से मुराद दो तरह के काम हैं जो हक़ीक़त में एक दूसरे के लिये ज़रूरी हैं। मासूम फ़रमाते हैं कि **"एक हिजरत गुनाहों से होती है और दूसरी हिजरत अल्लाह और उस के रसूल की तरफ़ होती है"** कि अगर इनसान के अमल के दामन पर गुनाहों का धब्बा है तो उसके क़दम इसमत के दरबार की तरफ तेजी से न उठ सकेंगे और बद आमालियाँ उस के पैरों में बेड़ियाँ पहनाती रहेंगी इस लिये मासूम ने फ़रमाया है कि **"बेहतरीन और फ़ज़ीलत वाली हिजरत यह है कि बुराईयाँ छोड़ दी जाएँ।"** चुनान्चे शौक़ व चाहत के साथ इसलाम के घेरे में आ जाने वाले को मासूमीन अ० ने मुहाजिर कहा है। यानी कुफ़्र से इसलाम की तरफ़ आना भी एक हिजरत है बल्कि यही अस्ल हिजरत है चाहे उस के लिये इनसान को अपना घर बार वतन ख़ानदान माल व असबाब ज़मीन व जायदाद सब कुछ छोड़ना पड़ जाए कि दीन और परवरदिगार की इताअत के मुक़ाबिले पर कोई चीज़ नहीं आ सकती है।

सूरए अनकबूत की छप्पनवीं आयत के सिलसिले में पाँचवे इमाम अ0 ने बयान फ़रमाया है कि फ़ासिक़ यानी गुनाह करने वाले बादशाहों की इताअत न करो और अगर उन की इताअत न करने की सूरत में तुम्हें अपने दीन के लिये ख़तरे का एहसास हो तो अल्लाह की ज़मीन बहुत फैली हुई है कहीं और चले जाना। इसी आयत की रोशनी में छठे इमाम अ० फ़रमाते हैं कि **"जिस जगह गुनाह हो रहे हों वहाँ से हिजरत कर जाओ।"** हिजरत की अहम्मियत के लिए इतना ही काफ़ी है कि खुद रसूल-ए-इसलाम ने दीन को

बचाने और फैलाने के लिये अपना वतन छोड़ दिया। जिस को आप अपनी जान से ज़ियादा चाहते थे। आप का तबलीग़ी मिशन भी यहीं से शुरू हुआ आप ने अल्लाह की वहदानीयत का कलिमः भी यहीं पढ़वाया और न किसी से लड़े और न जंग की और न ही किसी को क़त्ल किया कि जिसकी बुनियाद पर यह सोचा जा सकता हो कि इस डर से हिजरत कर गए कि कुफ़्फ़ार कहीं आप से बदला न ले लें। आप की हिजरत की एक वजह ये भी थी कि मक्का बेदीनी के घटाटोप अँधेरे और जाहिलीयत के घिनावने माहौल के सबब दिन ब दिन नए मुसलमानों के लिये तकलीफ़ और उन की मौत का सेण्टर बनता जा रहा था। और मुसलमानों के हालात भी ऐसे नहीं थे कि वह काफ़िरों का डट कर मुक़ाबिला कर सकते। अब उनके सामने मक्का छोड़ने के अलावा कोई रास्ता नहीं था। इस लिये रसूल-ए-इसलाम ने मुसलमानों को अलग-अलग जगहों पर जाने का हुक्म दे दिया। हिजरत करने वाले मुहाजिरीन को रोकने के लिये कुफ़्फ़ारव मुशरिकीन उन के घर वालों को कैद कर रहे थे। और मुहाजिरीन किसी भी चीज़ की परवाह किये बग़ैर मक्का छोड़ रहे थे। धीरे-धीरे मक्का मुसलमानों से ख़ाली होने लगा और ज़ियादातर मुसलमान मदीने में बस गए मक्के के हालात और मदीने में मुसलमानों के इसतेक़बाल की ख़बरों ने कुरैश के कुफ़्फ़ार को और ही उलझन में डाल दिया। कुफ़्फ़ार ने मिल कर इसलाम को ख़त्म करने की ठान ली कि पैग़म्बर-ए-इसलाम की ज़िन्दगी को ख़त्म कर देना ही उन की ज़िन्दगी का मक़सद बन गया। क़त्ल की मिल जुल कर तैयारियाँ शुरू हो गईं ताकि क़त्ल का इलज़ाम किसी एक क़बीले पर न आ सके। इधर अल्लाह ने भी हुक्म दे दिया कि ऐ रसूल! अब तुम भी मक्के से चले जाओ। रात का सन्नाटा, घर के चारों तरफ़ दुश्मनों का घेरा। नबी ने हज़रत अली अ० को अपने बिस्तर पर सुलाया और खुद मक्के से मदीने की तरफ़ चले गए। मशहूर ये है कि पैग़म्बर-ए-इसलाम ने एक मुट्ठी मिट्टी उठाई और उस पर सूरए यासीन की आयत **''व जअलना मिम बैनि ऐदीहिम सद्दों व-व मिन ख़लफ़िहिमसद्दन-फ़-अग़शैयनाहुम फ़हुम ला युबसिरून।''** पढ़ कर फूँकी और दुश्मनों की तरफ़ उछाल दी। रसूल-ए-इसलाम उन के दरमियान से

गुज़र गए और वह देख भी न सके।
(तारीख़-ए-तहलीली)

पैग़म्बर स० एक ग़ार में ठहरे और अजनबी रास्तों से होते हुए यसरिब जा पहुँचे। इस तरह हिजरत मुसलमानों की सरबुलन्दी, इसलाम की कामियाबी और कुफ़्फ़ार की दीन दुश्मन पालीसियों के नाकाम होने की वजह बन गई। रसूल-ए-अकरम स० की हिजरत से जो सब से बड़ा फ़ायदा हुआ वह ये कि इसलाम किसी खास जगह तक न रहा बल्कि मक्के के बाहर भी इसलाम पहुँचा और लोगों ने उस से फ़ायदा हासिल किया दूसरा फ़ायदा ये हुआ कि हमारे रसूल स० जब तक मक्के में रहे मुसलमानों की कमी की वजह से न तो इसलाम के दुश्मन से जंग कर सके और न ही उन को उन की हटधरमी से रोक सके। लेकिन जब आप यसरिब तशरीफ़ लाए तो यहाँ पर आने के बाद चाहने वालों की एक बहुत बड़ी तादाद आप के साथ हो गई। और मुसलमान एक बड़ी ताक़त बन कर उभर कर सामने आए। आख़िर में खुद मक्का भी मुसलमानों के क़ब्ज़े में आ गया और वह इसलाम का चराग़ कि जिसे दुश्मन मक्के में ही बुझा देना चाहते थे उस को रसूल-ए-इसलाम ने यसरिब (जो बाद में मदीनतुन्नबी कहा जाने लगा)में ले जाकर ऐसी रोशनी दी कि क़ियामत तक इसलाम का चराग़ जलता रहेगा और लोग उसकी रोशनी से फायदा उठाते रहेंगे। (इन्शाअल्लाह) पैग़म्बर-ए-इसलाम की हिजरत इसलामी तारीख़ का इतना अहम वाक़िआ है कि इसी वाक़िए की याद में आज इसलामी तारीख़ हिजरी तारीख़ कहलाती है। और उसकी बुनियाद भी खुद पैग़म्बर-ए-इसलाम ने रखी थी।□□

तीन चीज़ों से दिल मुर्दा हो जाता है

- पस्त लोगो के पास उठने बैठने से
- औरतों के साथ बातें करते रहने से
- और मालदारों के साथ रहने से।

लानत के क़ाबिल है।

सफ़र में अपने खाने को अकेला खाने वाला, जंगल में अकेला सफ़र करने वाला और घर में अकेला सोने वाला।

जागना तीन आदमीयों के लिए है।

- नमाज़-ए-शब पढ़ने वाले के लिए
- तालिबे इल्म के लिए।
- और नई दुल्हन के लिए (शौहर के घर)

(रसूलुल्लाह स०)

फ़क़ीरों और मिस्कीनों का हक़

अली सईद थीथकवी

पुराने ज़माने की बात है कि अल्लाह का एक नेक बन्दा था उस के तीन बेटे थे अल्लाह ने उस को बहुत ज़ियादा माल व दौलत दी थी उस के एक बाग़ था जिस में तरह तरह के फलों के दरख़्त थे वह बाग़ हमेशा हरा भरा रहता था दूर-दूर तक ऐसा बाग़ कहीं दिखाई न देता था। वह अल्लाह का बन्दा हर साल फ़क़ीरों, मिसकीनों और मोहताजों को उस बाग़ के फलों से उन का हिस्सा दिया करता था और बाक़ी फल अपने घर ले आता था। हर साल उस का यही दस्तूर था। वह कभी किसी फ़क़ीर व मोहताज को धुतकारता नहीं था बल्कि जो भी उस के दर पर आता उसको कुछ न कुछ ज़रूर देकर रुख़सत करता था और ज़रूरत मन्द लोगों की मदद करने के बाद खुदा का शुक्र भी करता था कि खुदा ने मुझे लोगों का हक़ अदा करने की तौफ़ीक़ दी। लेकिन उस के बेटे उसके इस काम से खुश नहीं थे बल्कि उस के इस ख़ैर ख़ैरात को फुज़ूल ख़र्ची समझते थे और जब दुनिया परस्ती ने उन को चैन से बैठने न दिया तो एक दिन उनमें से एक ने बाप से कह ही दिया कि अगर आप इसी तरह फ़क़ीरों और मिसकीनों को बाँटते रहे तो हमारी दौलत कम हो जायगी हमारा फ्यूचर ख़राब जायगा और फिर हम को दूसरों के सामने हाथ फैला फैला कर माँगना पड़ेगा। लेकिन उस मोमिन मर्द पर इन सब बातों का कोई असर नहीं हुआ बल्कि अपने बेटे को समझाया कि हमारे पास बाग़ और उसके अलावा जो कुछ भी है वह हक़ीकत में अल्लाह की मिल्कियत है और उस ने हम को वकील बनाया है कि हम फ़क़ीरों, मिस्कीनों और मोहताजों को उन का हक़ दें और याद रखें कि ऐसा करने से माल बढ़ता है और देखों मैं तुम्हें वसीयत करता हूँ कि तुम मेरी पैरवी करते हुए लोगों के हुक़ूक़ अदा करते रहना और कभी भी मेरी वसीयत के ख़िलाफ़ न करना ताकि तुम अल्लाह के अज़ाब से बच जाओ।

कुछ दिनों के बाद वह नेक बन्दा बीमार हो गया और बहुत ही कमज़ोर हो गया जब उस की ज़िन्दगी ख़त्म होने लगी तो उस ने अपने तमाम बेटों को जमा किया और उनको सख़्त हिदायत की कि कभी मेरी वसीयत की मुख़ालिफ़त न करना वरना पछताओ गे। आख़िर

कार वह बन्दए खुदा इस दुनिया से रुख़सत हो गया।

वक़्त तेज़ी से गुज़रता गया और वो वक़्त भी आया कि दरख़्त फलने लगे बाग़ में हर तरफ़ हरियाली ही हरियाली थी। धीरे धीरे फल तोड़ने का भी वक़्त आया। चुनान्चे वो सब भाई एक रात जमा हुए और मीटिंग की तो उन में से दो ने कहा कि आज से कभी भी फ़क़ीरों और मिस्कीनों को कुछ नहीं दिया जायगा बल्कि इस साल बाग़ से जो भी हासिल होगा उस को जमा करेंगे आपस में बराबर तक़सीम करेंगे और इस तरह से हम बहुत मालदार हो जायेंगे तो तीसरे ने कहा कि तुम लोगों को क्या हो गया है? तुम फ़क़ीरों और मिस्कीनों को उन का हक़ क्यों नहीं दोगे? क्या तुम्हें अल्लाह की नाराज़गी और उसके अज़ाब का ख़तरा नहीं है? लेकिन वह दोनों नहीं माने और अपने ग़लत इरादे पर अटल रहे। अल्लाह को उनकी ये हरकत बहुत बुरी लगी और उस ने फ़ौरन उन के बाग़ पर अज़ाब नाज़िल कर दिया। दरख़्त खुद बखुद उखड़ कर गिरने लगे तमाम फल बर्बाद हो गए टहनियाँ टूट टूट कर गिरने लगी अब दूसरे दिन जब फल तोड़ने के लिए उस बाग़ के क़रीब पहुँचे तो उनको सख़्त हैरत हुई और हसरत से एक दूसरे का मुँह देखने लगे। क़ुर्आन ने उन की कैफ़ियत इस तरह बयान की है कि उन में से हर एक ने दूसरे पर मलामत की ये कहते हुए कि काश हम बग़ावत न करते। हमें इस क़ुर्आनी क़िस्से से सबक़ मिलता है कि हम फ़क़ीरों और मिसकीनों के हुक़ूक़ को कभी न भुलाएँ।

इमाम के टोकने का तरीक़ा

शक़रानी का तअल्लुक इमाम जाफ़र सादिक़ अ० के ज़माने से था वह खुद को अहले बैत अलैहिमुस्सलाम का मुहिब और चाहने वाला कहता था इस के बावजूद शराब पीता था और उस अज़ीम गुनाह में फँसा हुआ था।

एक दिन रास्तें में इमाम अ० से मुलाक़ात हुई उस वक़्त वहाँ कोई न था। इमाम अ० ने उस के अमल पर तनक़ीद करते हुए उसे शराब पीने से मना किया और धीरे से कहा कि 'अच्छा अमल जिस किसी से भी हो बेहतर है और तुम करो तो बहुत ही बेहतर है क्योंकि तुम हम से वाबस्ता हो।"

और बुरे अमल को जो भी करे वह बुरा है और अगर तुम उसे अंजाम दो तो बहुत ही बुरा और नापसंदीदा है।

हराम माल

नईम अब्बास नक़वी

एक मरतबा का वाक़िआ है कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा स० ने अपने एक खुतबे में इरशाद फ़रमाया कि दुनिया में लोगों में से बहुत से लोग नेक अमल करते हैं। मिसाल के तौर पर नमाज़ पढ़ते हैं, रोज़ा रखते हैं और रातों को इबादत करते है लेकिन क़ियामत के दिन जब ये लोग हिसाब किताब के लिये हाज़िर होगें तो उन का कोई भी अमल क़ुबूल नहीं होगा और उन की तमाम इबादतें बातिल होंगी और खुदा वन्दे आलम की तरफ़ से उन को हुक्म दिया जाएगा कि वो लोग जहन्नम में चले जाएँ।

जब लोगों ने आप की बातों को सुना तो तअज्जुब में पड़ गए और आप के सहाबी सलमान फ़ारसी ने पूछा कि या रसूलल्लाह वह लोग कि जिन्होंने नमाज़ें पढ़ी हैं, रोज़ा रखा है, हज किया है, ग़रीबों की मदद की है इस के बावजूद भी ये लोग जहन्नम में जाएँगे? आप ने फ़रमाया हाँ।

इन तमाम इबादतों के बावजूद ये लोग जहन्नम में जाएँगे फिर हज़रत सलमान ने पूछा लेकिन इन्होंने कौन सा ऐसा काम अनजाम दिया है जिस की बुनियाद पर इन के तमाम आमाल व इबादत बातिल हो जायगी। आप ने फ़रमाया ये वह लोग हैं कि जिन्होनें ने हराम माल कमाया है और लोगों के माल को बग़ैर इजाज़त के इसतेमाल किया है और ये लोग अपनी रोज़ी को हराम रास्ते से खाते हैं जिस की वजह से खुदा उन के आमाल और इबादात को क़ुबूल नहीं करेगा और जहन्नम में भेजेगा। तो जो शख़्स अपनी रोज़ी को हलाल रासते से नहीं हासिल करेगा खुदावन्दे आलम उसकी तमाम इबादत को रद कर देगा और उस का ठिकाना सिर्फ़ और सिर्फ़ जहन्नम होगा।

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा स० ने फ़रमाया
"जो मेरी औलाद से मुहब्बत न करे वह या तो मुनाफ़िक़ है या जिना से पैदा हुआ है या हैज़ से"

कम्प्यूटर और हम

अम्मार नकवी

शुरू से ही इनसान इस कायनात की उलझी हुई गुत्थियों को सुलझाने ओर अपनी ज़िन्दगी को आसान बनाने के लिये कोशिश करता रहा है इस सिलसिले में उस ने अपनी सोच समझ और अक़्ल से बहुत सी चीज़ें ईजाद की। इन ईजादों में अक़्ल को हैरत में डालने वाला एक कम्प्यूटर भी है। कम्प्यूटर अब इनसानी जिन्दगी पर ज़ियादा असर डालने वाला हो गया है और आज हर शोबे और हिस्से में यह अहम रोल अदा कर रहा है। ख़ास तौर से पैग़ाम लेने और पहुँचाने के सिलसिले में। आज कम्प्यूटर हमारी ज़िन्दगी के बहुत से हिस्सों से जुड़ा हुआ है। तालीम व तरबियत से लेकर तिजारत व सनअत, मैन्यूफैक्चरिंग तक अपनी बेहतरीन कारकर्दगी दिखा रहा है। आज हमारे लिये ज़रूरी है कि कम्प्यूटर एजूकेशन की क़द्र करें और उस को सीखने और ज़िन्दगी में उस से फायदा उठाने की कोशिश करें। क्योंकि वह ज़माना दूर नहीं कि जब कम्प्यूटर एजूकेशन से नावाक़िफ़ आदमी को जाहिल समझा जायगा। अपनी ज़िन्दगी को ज़माने के साथ गुज़ारने के लिये हमें उसे क़ुबूल करना होगा।

किसी ज़माने में हमारे बाप दादा इल्मी दुनिया पर छाए हुए थे और इल्मी व साइंसी दुनिया में मुसलमानों का सिक्का चलता था यहाँ तक कि मार्डन कैमेस्ट्री के बाबा कहे जाने वाले जाबिर बिन हय्यान जो हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ अ० के शार्गिद थे इन का तअल्लुक़ भी हम से ही था। क्या हमारे लिये ये शर्मनाक बात नहीं है कि मौजूदा नई टेक्नोलोजी से हम नावाक़िफ़ हों और दूसरे हम से आगे निकल जायें और हम जाहिल समझे जाएँ।

हमारे मुकद्दस मज़हब इसलाम ने दीन की तबलीग़ की बहुत ज़ियादा ताकीद की है यहाँ तक कि उस को फ़ुरूए दीन में शामिल किया है और उस का नाम अम्रबिल मारूफ़ व नहीं अनिल मुनकर यानी नेकियों की हिदायत व बुराइयों से रोकने का नाम दिया है। इस लिये हमारे लिये ज़रूरी है कि अपनी ज़रूरतों और दीन की मौजूदा ज़रूरतों को पूरा करने के लिए इस सदी के सब से बड़े पैग़ाम देने के ज़रीए और वसीले यानी इण्टरनेट का इस्तेमाल करने के लिये कम्प्यूटर सीखें और सच्चे मज़हब का पैग़ाम ज़्यादा से ज़्यादा

फैलाएँ। ख़ास तौर पर ये ज़रूरत उस वक़्त और ज़ियादा बढ़ जाती है कि जब दूसरे इस्लाम को तंग नज़र बताते हैं इस पर कीचड़ उछालते हैं और हर तरह से मश्कूक बना देने की फ़िक्र में हैं। ऐसे वक़्त में हमारे लिये ज़रूरी है कि हम इस्लाम की सही सूरत पेश करें और इस सिलसिले में नई से नई टेक्नोलोजी का इस्तेमाल करें और इसलाम को ग़लत समझने वालों के दिलों से ग़लत ख़यालात निकाल कर सही इसलामी अक़ीदा अपनाने की दावत दें। ☐☐

बेहतरीन क़तरा ख़ुदा की राह में बहने वाला ख़ून का क़तरा है या ख़ुदा के ख़ौफ़ से टपकने वाला आँसू का क़तरा है।

(ज़ैनुल आबिदीन अ०)

अब तक जो लोग तनज़ीमुल मकातिब हिन्दी मासिक के मेम्बर बन चुके हैं उन सब को दस्ती या डाक से शुमारः भेजा जा रहा है अगर आपको नही मिल पा रहा है तो अपने डाक खाने से मालूमात कीजिए। इदारा भेजने का ज़िम्मेदार है आप के पाने की जिम्मेदारी लेना नामुमकिन है। फिर भी न मिलने की सूरत में आप लिखें। आप तक शुमारः पहुँचाने की कोशिश की जाएगी।

इमाम जाफ़र सादिक़ अ० ने फ़रमाया

1. जब कोई नेमत मिले तो बहुत ज़ियादा शुक्र करो ताकि नेमत में इज़ाफ़ा हो।
2. जब रोज़ी तंग हो तो इस्तिग़फ़ार ज़्यादा किया करो कि रिज़्क के दरवाज़े खुल जाएँ।
3. जब हुकूमत या किसी दूसरे की तरफ़ से कोई दुख पहुँचें तो "लाहौ-ल-वला-कू-व-त इल्लाबिल्लाहिल अलीयिल अज़ीम" ज़ियादा कहो ताकि दुख दूर हो, और खुशी मिले।
4. अच्छों से मिलो, बुरे लोगों के क़रीब न जाओ क्यों कि वो ऐसे पत्थर हैं जिन में जोंक नहीं लगती यानी उन से फ़ायदा नहीं हो सकता।
5. चुग़ल ख़ोरी से बचो क्यों कि ये लोगों के दिलों में दुश्मनी और अदावत का बीज बोती है।
6. हक़ बात कहना चाहिये चाहे वो अपने को फ़ायदा पहुँचाने वाली हो या नुक़सान।
7. जो शख़्स बेवक़ूफ़ों से तअल्लुक़ात रखेगा ज़लील होगा। जो उलमा के पास उठे बैठेगा इज़्ज़त पायगा। जो बुरी जगह देखा जायगा बदनाम होगा।
8. जो किसी के लिये कुआँ खोदेगा खुद उसमें गिरेगा।

शार्ट कट

फक़ीहुल हिन्दी

दो मुबल्लिग़ तबलीग़ करने वाले सफ़र करते हुये एक जगह पहुँचे। जहाँ से चले थे उन लोगों ने थोड़ा नाश्ता साथ कर दिया था। जहाँ ठहरे वहाँ नाश्ता मेज़बान के हवाले कर दिया तीन बजे सेपहर को दोपहर का खाना आया। मेज़बान भी शरीक थे। तीन आदमियों में चार चपातियाँ थी। सब्र व शुक्र के साथ खाना हो गया। और यही ख़याल आता रहा कि काश अपना नाश्ता ही रख लिया होता रात को मेज़बानी के रख रखाव और तरीक़े में फ़र्क़ न आया सुब्ह को दोनो खुद ही रवानगी के लिए बेचैन थे। **तबलीग़ और मेहमान से छुटकारे का यह शार्टकट था।**

कभी ज़मींदारी थी हर इमाम बाड़े में ज़ाकिर आता था। ज़मींदारी ख़त्म हो गई। विरासत में ज़ाकिर बुलाने की जिम्मेदारी रह गई बिजली के पंखे की हवा नुकसान करती है। लाउडस्पीकर की आवाज़ कानों को बुरी लगती है। गलियों-गलियों निकल चालिए। छोटे रास्ते से सवारी से पहले पहुँच जायेंगे। यानी गरमी सहना। पैदल चलना। गला फाड़ना ज़ाकिर के हिस्से में आया और खर्च के **शार्ट कट मेज़बान के हिस्से में आये।**

सेकेण्ड डिवीज़न तो धरा है यह कहते हुए दाख़िल हुए क्योंकि साल में चन्द दिन पढ़ा था। कुछ आगे वाले की कापी देखी। कुछ सोचा और जवाबात अपने ख़याल में ऐसे लिख दिये कि फस्ट आने में अगर शुब्हा था तो सेकेण्ड पास होने का तो पक्का यक़ीन था। लेकिन रिज़ल्ट में फ़ेल निकले। तीन साल का कोर्स सात साल में पूरा किया क्योकि अलावा तालीम के हर काम में दख़ील रहते थे और डिग्री मुलाज़ेयत, नौकरी, खुशहाली, इज्जत तक शार्ट कट के जरिये पहुँचना चाहते थे। **नतीजे में शार्ट कट लॉंगरूट में तब्दील हो गया।**

डयूटी से आते ही मुअम्मा भरने लग गये। बीबी चूल्हा जलाए बैठी सुलग रही थी कि मियाँ बाज़ार से जाकर सौदा लाये तो हॉडी मुक्म्मल हो। मगर मियाँ मुअम्मा हल कर रहे हैं। मुअम्मा तो हल हुआ अलबत्ता घर में झगड़ा हो गया। झगड़े के बाद गये तो दिमाग़ मुअम्में में लगा रहा। आधा सौदा लाये आधा नही लाये बल्कि उसके बदले

दूसरा सामान उठा लाये। लड़ते हुये गये, लड़ते हुए आये। वापसी पर मज़ीद झगड़ा हो गया। सामान फेंका, बीवी को चूल्हे में झोंका और मुअम्मे में लग गये। हजारों मुअम्मे भर और भेज दिये गये। मगर कभी इनआम नहीं निकला **यह शार्ट कट से दौलतमंद होना चाहते थे।**

दरजनों लाटरी के टिकट हर माह ख़रीदे। और लाटरी खुलने के दिनों में इन्तिज़ार करते रहे हमेशा जागते में लखपती होने का ख़ाब देखते रहे। पैसे भी गये हराम में खर्च करने के गुनहगार भी हुए। इन्तिहाई कर्ब तकलीफ़ में जिन्दगी गुज़ारी। चिडचिड़े हो गये। लोग सनकी कहने लगे। घर बाहर सब जगह ज़िन्दगी मुश्किल हो गई। लाटरी निकलने की उम्मीद में कर्ज़दार भी हो गये। शार्टकट से अमीर बनने की कोशिश में और ग़रीब हो गये। क़र्ज बढ़ा। इज्जत गई।

गला अच्छा मिला था। लोगों ने गला इस्तेमाल कर लिया। मेरा कलाम पढ़ दो मेरा कलाम पढ़ दो। साथ जाने लगे इज़्ज़त पाने लगे। कभी-कभी किसी ने कुछ कहकर दे दिया। कलाम और गला मुशाइरा मक़ासिदा लूट लिया। **शार्टकट से शायर हो गये।** मगर न तालीम न सलाहियत आख़िर चोरी का कलाम पढ़ने लगे। ग़लत भी ना मौजूँ भी। यहाँ तक कि मतबूआ छपा हुआ कलाम भी पढ़ना पड़ा पढ़ाई का ज़माना गुज़रता गया और यह मुशाइरे पढ़ते रहे। कन्ठा फूटा, गला रूखसत, इज़्ज़त ख़त्म, दावतें मादूम जूते का काम सीखने गये दिल न लगा। ज़रदोज़ी में जी न लगा। बीड़ी-बीड़ी को मोहताज हो गये। लक़ोदक़ ज़िन्दगी कैसे गुज़रे? **कौन पूछे इज्जत के शार्ट कट ने जिल्लत पैदा कर दी।** हराम मौत के अलावा इससे नजात पाने का कोई ज़रीअः नही। **मगर खुदकुशी के शार्टकट के बाद दोज़ख़ की दायमी आग ही आग है।**

हाफ़िज़ा तेज़ था। घर में ज़ाकिरों के फ़जायल और क़सायद बयान होते थे। फुलाँ ने इतना कमा लिया कार बिल्डिंग इतने मशहूर हो गये। सुनसुन कर साहबेज़ादे को ज़ाकिर बनने का शौक़ हो गया मजलिसों में पाबन्दी से शिरकत करने लगे। आईने के सामने तक़रीर की मश्क़ करने लगे। टेप जमा करने लगे। पहले मुहल्ले में फिर शहर में फिर बाहर निकले। पार्टी में शामिल होकर ज़ाकिर हो गये। दीन से न कोई

मतलब था न कोई हो सकता था वालिदैन खुश कि घर जन्नत बनने लगा। साहेबज़ादे ख़ुश कि मशहूर जाकिर हो गए सामेईन, सुनने वाले खुश कि मजलिस ज़ोरदार हुई। बानिये मजलिस खुश कि मजलिस कामियाब रही। सिर्फ हुसैन अ० ना खुश थे कि काश तुम इल्मेदीन हासिल करके ज़ाकिर होते तो मैने अपने ख़ून से जिस दीन को बचाया था तुम्हारे बयान से उस दीन का ख़ून न होता मगर जाकिर और उनके ख़ानदान का ख़ून मारे खुशी के वल्लियों उछल रहा है। कि बग़ैर पढ़े लिखे डायलाग और ज़ाकिरीन के कैटलाग के शार्टकट से यह कमाऊ ज़ाकिर हो गये।

ऐसी पाबन्दी से आग़ाजे बुलूग यानी जवानी की शुरूआत से दाढ़ी मूँडी कि घर वाले और साथी सब इस धोखे में रहे कि ग़रीब के दाढ़ी निकली नही। क़द लम्बा, क़बा भी लम्बी हो गई। अगर दाढ़ी भी होती तो माहे मुबारक में बड़े ठाट बाट के शानदार पेशनमाज़ हो जाते मगर वह रमज़ान से एक हफ़्ता क़ब्ल हमेशा ग़ायब हो जाते और ईद का चाँद निकलते मालूम होता किसी दूर दराज़ सूबे में थे। यह सारी जिन्दगी ख़ाजा सरा रहते वह तो एक दिन मदरसे में इन का एक मामूम पीछे नमाज़ पढ़ने वाला मालूम नहीं कैसे टपक पड़ा तो ग़ायब दाढ़ी का पता चला। इस ग़ैर आदिल मामूम ने अपने इमाम की अदालत का भॉडा फोड़ दिया। दाढ़ी ग़ायब थी अदालत ग़ायब थी। मगर मसायल से जिहालत मौजूद थी। मगर मामूम भी तो जाहिल थे। ऐसों को तो बे गुस्ल व वुज़ू पढ़ाना चाहिए। उन्होने बिना तक़द्दुस के हमेशा वुज़ू से पढ़ाई। इस हादिसे के बाद माहे रमज़ान के तमाम पेश नमाज शाबान से दाढ़ी बढ़ाना शुरू कर देते हैं और ईद के बाद क़स्रे रीश दाढ़ी में कमी कर देते है। सिर्फ़ दाढ़ी के ज़रिये पेश नमाज़ हो जाना पेशनमाज़ी का शार्टकट है मोमिनीन को भी पेशनमाज़ दरकार है पेश नमाज़ भी दाम बिछाये हैं दाम लग गये धोखे में आ गये। आख़िरी लड़ाई दोनो दोज़ख़ में लड़ेंगें, वहाँ तो बड़े-बड़े इमाम व मामूम लड़ रहे होगें। एक कोने में इनका भी हक़ीर छोटा सा दन्गल हो जायगा। फिर लड़भिड़ कर भी एक ही जगह तो रहेगें।

मियाँ कब दस्तारे फ़जीलत बुजुर्गी की पगड़ी बाँधने जा रहे हैं। अब नज़फ

तो जाना नहीं होता कुम जाना पड़ेगा। मोतक़िद अक़ीदत रखने वाले ने जनाब से साहबज़ादे के मुतअल्लिक़ पूछा जो आज तो सिनेमा जा रहें हैं। वह कल जब आयगा तब आयगा जब कुम जाना होगा और कैसे जाना होगा वहाँ तो अब लुमअः का इम्तेहान होता है। लुमअः तो बाप ने भी नहीं पढ़ी थी नजफ़ जाकर जनाब हो आये थे। लुमअः की मुश्किल का हल निकाला दूर का सफ़र किया। बाप वापस आ गये बेटे कहीं इमाम-ए-जुमअः व जमाअत हो गये। अब तो पलटे तो शार्ट कट से जनाब हो चुके थे। **जनाब होना खुद भी मुजतहिद और फ़क़ीह होने का शार्ट कट है।**

ग़रज़ कि शार्ट कट यानी अपने को भी धोखो देना है और दूसरे को भी धोखा में रखना है। ब्लैक के शार्ट कट से लखपती होना शार्ट कट से नेता वज़ीर और पार्टी का ओहदेदार होना। दल बदली के शार्ट कट से मिनिस्टर अगर क़बिले मज़म्मत बुरा कहने के लायक है तो जाहिल का शायर बन जाना, दीन से नावाक़िफ़ का ज़ाकिर हो जाना बेअमल का पेश नमाज़ हो जाना लिबास कपड़ों की बुनियाद पे मुजतहिद हो जाना भी क़ाबिले मजम्मत बुरा कहने लायक़ है और क़ाबिले अज़ाब भी। इनको अख़िरत में अज़ाब होगा और यह दुनिया में दूसरों के लिए अज़ाब बने रहेगें।

लेकिन उसूले दीन को पढ़े समझे और माने सिर्फ़ सुन कर अपने को मुसलमान, मोमिन मुहिब्बे अहलेबैत, अहलेबैत का चाहने वाला समझ लेना और वाजिबात को छोड़ कर गुनाहों में डूब कर सिर्फ चन्द नज़रें और मजालिस और थोड़े से कारे ख़ैर,अच्छे काम अन्जाम देकर अपने को पक्का जन्नती समझ लेना हमारी बड़ी ख़तरनाक भूल है क्योंकि हम शार्ट कट से अपने को दोज़ख़ में खड़ा पायेगे, इसके बजाए, इल्में दीन हासिल करके मारिफ़त व ईमान हासिल करें और अमले सालेह अच्छे काम को अपनायें ताकि हमेशा-हमेशा के लिए दख़िले जन्नत हो जायें। ❑❑

हमारे शीओं में तीन ऐब न होंगे

- हाथ फैलाकर माँगना
- कंजूसी करना।
- और बदकिरदारी करना।

(इमाम सादिक़ अ०)

क़सीदा

पैग़ाम-ए-मुहम्मद (स०)

पयाम आज़मी

पा-रए दिल में रुके या रगे जाँ तक पहुँचे।
देखिये नश्तर-ए-बेदाद कहाँ तक पहुँचे।।
दिल-ए-खुद्दार की गैरत का तक़ाज़ा है यही।
जज़-बए इश्क़ न फ़रियादों फ़ुगाँ तक पहुँचे।।
मय वही मय है जो हर शी-शए दिल में ढल जाए।
जाम वह जाम है जो तश्ना दहाँ तक पहुँचे।।
दूर तक क़ाफ़ि-लए ज़ुलमते शब ठहरा है।
रोश्नी शमए मुहब्बत की कहाँ तक पहुँचे।।
मेरी हिम्मत से जो टकराए तो खुद डूब गए।
कितने तूफ़ाँ मेरी कश्तीये रवाँ तक पहुँचे।।
अपना घर जल गया कुछ देर उजाला तो हुआ।
आशियाँ ले के हमीं बरक़े तपाँ तक पहुँचे।।
हम वो गुलहाए सदाक़त हैं गुलिस्ताँ में नदीम।
और भी रंग प आए जो ख़िज़ाँ तक पहुँचे।।
हम कि निकले हैं अगर फ़स्ल-ए-बहाराँ बन कर।
गुलसिताँ हो गए आबाद जहाँ तक पहुँचे।।
अपनी रफ़्तार-प-तारीख़ गवाही देगी।
चाँद को रौंद गए काहकशाँ तक पहुँचे।।
फूल बन जाएँ ज़माने को मुअत्तर कर दें।
खून-ए-दिल मेरा जो ख़ारों की ज़ुबाँ तक पहुँचे।।
तब है ज़ेबा उसे इस अहद-ए-तरक्क़ी-प-गुरूर।
पहले दुनिया मेरे क़दमों के निशाँ तक पहुँचे।।
आज मजबूर हैं माज़ूर हैं नाकाम हैं हम।
सिलसिले अपनी तबाही के यहाँ तक पहुँचे।।

आह ये दिन की बई जुबबउ दस्तार-उ-क़बा।
हज़रत-ए शेख़ भी साक़ी की दुकाँ तक पहुँचे।।
नै मसाजिद-प-निगाहें हैं न कुरआँ-प-नज़र
बुतशिकन मिदहत-ए-अन्दाज़-ए-बुताँ तक पहुँचे।।
रास्ते बन्द हैं हर सिम्त मुसलमानों पर।
एक मजबूर की आवाज़ कहाँ तक पहुँचे।।
आज उम्मत-प-अजब वक़्त पड़ा है सरकार।
ये सदा काश रसूल-ए-दो जहाँ तक पहुँचे।।
सिलसिले मदहे पयम्बर के यहाँ तक पहुँचे।
मेरे अश्आर फ़रिश्तों की जुबाँ तक पहुँचे।।
मदहे ममदूहे-इलाही ने सिखाए हैं मुझे।
किस में हिम्मत जो इस अन्दाज़-ए-बयाँ तक पहुँचे।।
जिक्रे अहमद हुए कुरआँ में तो आयत ठहरे।
बन गए शेर जो शाएर की जुबाँ तक पहुँचे।।
पेश करता हूँ सर-ए-बज़्म फिर इक मतलए नौ।
रोशनी बन के जो साहिब नज़राँ तक पहुँचे।।
जिन्नो इन्साँ का तसव्वुर भी न वाँ तक पहुँचे।
क़दम-ए-साहिबे मेराज जहाँ तक पहुँचे।।
दो कमाँ कह के रखा खुद ही खुदा ने पर्दा।
कौन बतलाए कि सरकार कहाँ तक पहुँचे।।
क्या बड़ी बात है मेराज-ए-पयम्बर के लिये।
इसी मन्ज़िल से तो आए हैं जहाँ तक पहुँचे।।
दर-ए-अहमद-प-चलो चाँद-प- जाने वालो।
चाँद खुद आएगा तुम तक जो यहाँ तक पहुँचे।।

आज तक सीरत-ए-सलमान व अबूज़र है गवाह।
बन गए वह जो रसूल-ए-दो जहाँ तक पहुँचे।।
जलवा गर कर चुके जब अपने अबोजद का चमन।
रहमतें ले के हलीमा के मकाँ तक पहुँचे।।
अपनी गुरबत में भी भर-भर दिये दामन उन के।
जब यतीमान-ए-अरब तेरे मकाँ तक पहुँचे।।
खाए पत्थर तो मुहब्बत से दुआ देने लगे।
ज़ख़्म लगते रहे शिकवे न ज़ुबाँ तक पहुँचे।।
गैर आए तो बिठाया है अबा पर अपनी।
और अयादत के लिये दुश्मन-ए-जाँ तक पहुँचे।।
झुक गए ज़ुल्म के सर मिट गया ज़ालिम का ग़ुरूर।
ले के अख़लाक़ की तलवार जहाँ तक पहुँचे।।
तेरा घर जिस-प-तसद्दुक हो फ़लक की रफ़अत।
सजदा करने को सितारे भी यहाँ तक पहुँचे।।
तेरा भाई जो तेरे दीन का रखवाला था।
जिस की अज़मत को न इन्साँ का गुमाँ तक पहुँचे।।
तेरी बेटी की सख़ावत की कहानी सुन कर।
भीख लेने के लिये अहल-ए-जिनाँ तक पहुँचे।।
तेरे बेटे हैं तेरे दीन की रौनक जिन से।
तेरा पैग़ाम लिये नोक-ए-सिनाँ तक पहुँचे।।
तेरा इसलाम सदाक़त है जहाँ तक फैले।
तेरा पैग़ाम मुहब्बत है जहाँ तक पहुँचे।।
क्या सिला देगा कोई मदह-ए-पयम्बर का पयाम।
ये भी क्या कम है जो हम बाग़-ए-जिनाँ तक पहुँचे।।

इमाम जाफ़र सादिक़ अ०

कलीम इलाहाबादी मरहूम

ख़ल्लाक़-ए-दुआलम काऐसा शहकार इमाम-ए-सादिक़ हैं।
सरकार-ए-रिसालत का ज़िन्दा किरदार इमाम-ए-सादिक़ हैं।।
इसलाम के हर मनसब के लिये इक़रार इमाम-ए-सादिक हैं।
और कुफ्र के हर मज़हब के लिये इनकार इमाम-ए-सादिक़ हैं।।
कुदरत ने अता की है उन को परवाज़-ए-नज़र की वह ताक़त।
मज़हब की हर इक ख़िदमत के लिये तैयार इमाम-ए-सादिक़ हैं।
गर दीन-ए-खुदा पर हमला हो बन जाते हैं ये मज़हब की सिपर।
बातिल जो उठाए सर अपना तलवार इमाम-ए-सादिक़ हैं।।
सब अहले सितम उन से भागे ठहरा न कोई उन के आगे।
फ़र्रार हैं सारे अहले सितम कर्रार इमाम-ए-सादिक़ हैं।।
मनसूर का नासिर कोई नहीं इस रह का मुसाफ़िर कोई नहीं।
अब क़ाफ़िल-ए-हक़ के तनहा सालार इमाम-ए-सादिक़ हैं।
जो दीन-ए-खुदा का हो जोया उस के लिये हैं कुरआँ गोया।
दुश्मन के लिये इक फ़ौलादी दीवार इमाम-ए-सादिक़ हैं।।
ईमान की हर हिकमत उन से इसलाम की हर वुसअत उन से।
है इल्म अगर इक नुक़्त-ए-बा-परकार इमाम-ए-सादिक़ हैं।।
जो उम्मत-ए-हक़ में शामिल हो जो जन्नत-ए-हक में दाख़िल हो।
लाज़िम है उसे यह याद रहे सरदार इमाम-ए-सादिक़ हैं।।
मालिक से अगर तसदीक़ नहीं फिर कोई बशर सिद्दीक़ नहीं।
और दहर की हर सच्चाई का मेयार इमाम-ए-सादिक़ हैं।।

सवालात व जवाबात

सवाल 1. तरतीबी गुस्ल अगर दरिया हौज, तालाब वग़ैरा में करे तो क्या हर हिस्से पर गुस्ल की नीयत से पानी पहुँचाने के लिए दरिया वग़ैरा से बाहर निकल आना ज़रूरी है। और अगर दरिया वग़ैरा में खड़े रह के एक के बाद एक हिस्से को पानी से ऊपर उठा कर पानी में डुबो दे तो क्या गुस्ल सही नही होगा।

जवाब 1. बाहर निकल आने की शर्त नहीं है।

सवाल 2. वुज़ू में चेहरा धोने के बाद हाथों को धोते वक़्त सुराही से पानी डाल सकता है या चुल्लू में ले के पानी डालना ज़रूरी है।

जवाब 2. चुल्लू की कोई शर्त नहीं है। चेहरे पर हर जगह पानी का पहुँच जाना शर्त है।

सवाल 3. पैरो का मसह करते वक़्त अगर तलवा नजिस हो तो क्या वुज़ू बातिल है।

जवाब 3. वुज़ू बातिल नहीं है।

सवाल 4. क्या वुज़ू करने से पहले पेशाब पख़ाने के मक़ाम का पाक होना ज़रूरी है।

जवाब 4. ज़रूरी नहीं है लेकिन नमाज़ के लिए ज़रूरी है।

सवाल 5. अगर गुस्ल का वक़्त न हो तो नजासत की हालत में नमाज पढ़ी जा सकती है या नहीं।

जवाब 5. तयम्मुम करना ज़रूरी है।

सवाल 6. आबदस्त से बचे हुए पानी से या पीने से जो पानी बाक़ी बचा गया उस से वुज़ू किया जा सकता है या नही।

जवाब 6. किया जा सकता है। हाँ वुज़ू उस पानी से नहीं हो सकता है जो आबदस्त में इस्तेमाल हो जाए और उस को इस्तिन्जा का पानी कहा जाता है।

सवाल 7. एक आदमी के पैर में गहरा जख़्म है और उस पर पट्टी बँधी है उस पर मसह होगा या नही।

जवाब 7. उस पट्टी पर मसह करेगा और अगर एक उँगली भर जगह ख़ाली है तो उस पर मसह करेगा।

सवाल 8. सर्दी में पानी के इस्तेमाल से ख़तरा है मगर मै तयम्मुम नहीं करना चाहता तो क्या हुक्म है।

जवाब 8. ऐसे मौके पर तयम्मुम ही करना है इस के अलावा कोई दूसरा रास्ता नहीं है।

सवाल 9. अगर वुज़ू के बाद उँगली वग़ैरा की सख्त खाल उखड जाए तो क्या वुज़ू अब भी बाक़ी है।

जवाब 9. बाक़ी है।

सवाल 10. जुमअः का गुस्ल करने के बाद क्या वुज़ू करने की ज़रूरत है।

जवाब 10. आयतुल्लाह खुई र० अ० के नज़दीक गुस्ल के बाद वुज़ू ज़रूरी नही है। आयतुल्लाह सीसतानी भी यही फ़रमाते है कि वुज़ू ज़रूरी नहीं है।

रसूलुल्लाह स० ने फ़रमाया !

अक्ल से ज़ियादा काम आने वाला कोई माल नही है। और अपने ही को सब कुछ समझने से ज़ियादा घबराहट वाला कोई अकेलापन नही है। तदबीर जैसी कोई समझदारी नही है। और तकवा जैसी कोई शराफत नही है। अच्छी तरह मिलने-जुलने जैसा कोई साथी नही है। और अदब जैसी कोई मीरास नही है। तौफीक़ जैसा कोई फायदा नही है। और नेक काम जैसी कोई तिजारत नही है। सवाब जैसा कोई फायदा नही है। और शक व शुब्हे में रुक जाने जैसा कोई परहेज़ नही है। हराम से बचने जैसा कोई दुनिया का छोड़ना नही है। और सोच विचार जैसा कोई इल्म नही है ।

अपना हिसाब खुद कीजिये

नीचे कुल 15 सवालात हैं हर सवाल के तीन जवाब सामने लिखे हुए हैं। आप की नज़र में जो सहीह हो उस पर ✓का निशान लगाइये।

1. मगर ज़ालिमों ने जो बात उन से कही गई थी उसे बदल दिया तो हमने उन जालिमों पर उन की नाफ़रमानी की वजह से आसमान से अज़ाब नाज़िल कर दिया।

(i) ये सूरए ब-क़-रः की आयत न० 61 का तर्जुमा है।

(ii) ये सूरए ब-क़-रः की आयत न० 60 का तर्जुमा है।

(iii) ये सूरए ब-क़-रः की आयत न० 59 का तर्जुमा है।

2. और वह वक्त भी याद करो कि जब तुम ने मूसा से कहा कि हम एक तरह के खाने पर सब्र नहीं कर सकते। आप परवरदिगार से दुआ कर दीजिए कि हमारे लिए ज़मीन से सब्जी, ककड़ी, लहसुन, मसूर और प्याज़ वग़ैरा पैदा करे। मूसा ने तुम्हें समझाया कि क्या बेहतरीन नेमतों के बदले या मामूली नेमत लेना चाहते हो तो किसी शहर में उतर पड़ो वहाँ ये सब कुछ मिल जाएगा। अब उन पर ज़िल्लत और मोहताजी की मार पड़ गई और वह अल्लाह के ग़ज़ब में गिरफ़्तार हो गए। ये सब इस लिए हुआ कि ये लोग आयते इलाही का इनकार करते थे और नाहक खुदा के नबीयों को कत्ल कर दिया करते थे इसलिए कि ये सब नाफ़रमान थे और जुल्म किया करते थे।

(i) ये सूरए ब-क़-रः की आयत न० 60 का तर्जुमा है।

(ii) ये सूरए ब-क़-रः की आयत न० 61 का तर्जुमा है।

(iii) ये सूरए ब-क़-रः की आयत न० 62 का तर्जुमा है।

3. जो कोई ये जानना चाहे कि उसने नमाज़ से कितना फ़ायदा हासिल किया है उसे देखना चाहिये कि नमाज़ ने उसे बुरे नापसन्दीदा आमाल से रोका है या नही।

(i) ये कौल इमाम ज़ाफर सादिक़ अ० का है।

(ii) ये कौल इमाम मूसा काज़िम अ० का है।

(iii) ये कौल इमाम अली रिज़ा अ० का है।

4. दीन की शुरूआत ख़ुदा की मारिफ़त है और मारिफ़त का कमाल उसके एक होने का इक़रार है। और उस की यकताई और एक होने का कमाल ये है कि उसके सिफ़ात हई व कय्यूम ज़िन्दा व बाक़ी रहने को उसकी ज़ात से अलग न समझे क्यों कि ज़ात और सिफ़ात के अलग-अलग होने से यकताई बाक़ी नहीं रहती ।

(i) यह इर्शाद फ़रमाया है रसूलुल्लाह स० ने

(ii) यह इर्शाद फ़रमाया है हज़रत अली अ० ने

(iii) यह इर्शाद फ़रमाया है हज़रत हसन अ० ने

5. बुरे आमाल को जो कोई भी करे बुरा है और अगर तुम उसे अंजाम दो तो बहुत ही बुरा है और नापसंदीदा है। ये बात अपने एक मुहिब से

(i) इमाम ज़ैनुल आबिदीन अ० ने कही थी।

(ii) इमाम मु० बाक़िर अ० ने कही थी।

(iii) इमाम जाफ़र सादिक अ० ने कही थी।

6. चुगल खोरी से बचों क्यों कि ये लोगों के दिलों में दुश्मनी और अदावत का बीज बोती है।

(i) ये हदीस इमाम जाफ़र सादिक़ अ० की है

(ii) ये हदीस इमाम मूसा काज़िम अ० की है

(iii) ये हदीस इमाम अली रिज़ा अ० की है

7. पालने वाले! मेरे बच्चों के सिलसिले में तू मेरी मदद कर कि मै इनकी तरबीयत कर सकूँ, इन्हें अदब सिखा सकूँ और इन्हें नेकियों से सँवार सकूँ।

(i) ये दुआ के अलफ़ाज इमाम हुसैन अ० के हैं।

(ii) इमाम ज़ैनुल आबिदीन अ० के हैं।

(iii) इमाम मु० बाक़िर अ० के हैं।

8. ये लोग हराम माल खाते थे, लोगों के माल को बग़ैर इजाज़त उठा लिया करते थे, दूसरों का माल बग़ैर इजाजत खाने से परहेज़ नहीं करते थे और ये लोग अपनी रोज़ी हराम रास्तों से हासिल करते थे। इस वज़ह से खुदावन्द-ए-आलम इन की

बताओ फ़क़ीर और ख़ाली हाथ कौन है?

आसिफ़ सफ़वी

एक दिन रसूलुल्लाह स० ने अपने असहाब से पूछा बताओ फ़क़ीर और ख़ाली हाथ कौन है? असहाब ने जवाब दिया जिस के पास रूपया पैसा न हो और जिस के हाथ दुनिया के माल से ख़ाली हों। आँहज़रत स० ने फ़रमाया नहीं। फ़क़ीर वह नहीं है बल्कि फ़क़ीर व खाली हाथ वह है जो कियामत के दिन इस हाल में आए कि लोगों का हक़ उस के ज़िम्मे हो वह इस तरह कि उसने किसी को मारा हो या किसी को ना मुनासिब बातें कही हों, गाली वग़ैरह दी हो, किसी का हक़ बर्बाद किया हो या किसी का हक़ छीन लिया हो।

ऐसे आदमी के नामए आमाल में नेकियाँ और अच्छे काम जो होंगे वह उस से लेकर उन लोगों के हिस्से में डाल दिये जाएँगे जिन की उसने हक़ तलफ़ी की होगी। और अगर उस के आमाले ख़ैर और नेकियाँ न होंगी तो उन लोगों के गुनाह जिनकी उसने हक़ तलफ़ी की होगी उठाकर इस के हिस्से में डाल दिये जाएँगे।

हाँ ! मुफ़लिस व तिहीदस्त ऐसा ही शख़्स है। खुदावन्दे आलम ने सूरए अनकबूत की इस आयत में इसी बात को बयान फ़रमाया है कि **"और उन्हें एक दिन अपना बोझ भी उठाना पड़ेगा और उस के साथ उन लोगों का भी।"**

दिन	जून 2001	1422 हि०
जुमअः	1	**9** रबीउलअव्वल
सनीचर	2	**10**
इतवार	3	11
पीर	4	12
मंगल	5	13
बुध	6	**14**
जुमअरात	7	15
जुमअः	8	16
सनीचर	9	**17**
इतवार	10	18
पीर	11	19
मंगल	12	20
बुध	13	21
जुमअरात	14	22
जुमअः	15	23
सनीचर	16	24
इतवार	17	25
पीर	18	26
मंगल	19	27
बुध	20	28
जुमअरात	21	29
जुमअः	22	30
सनीचर	23	**रबीउस्सानी**
इतवार	24	**2**
पीर	25	3
मंगल	26	4
बुध	27	5
जुमअरात	28	6
जुमअः	29	7
सनीचर	30	8

तनज़ीमुल मकातिब

हिन्दी मासिक

मेम्बर शिप फार्म

नाम ....

पता ....

....

....

....

पिन कोड न० ....फोन/फैक्स नं० ....

मैं अपना सालाना चन्दः मुबलिग़ रू बज़रिए मनीआर्डर/ड्राफट /दस्ती भेज रहा हूँ।

ऊपर लिखे पते पर तनज़ीमुल मकातिब हिन्दी मासिक माह से जारी कर दें।

इस मैगज़ीन को बेहतर बनाने के लिये मेरी राय है :

दस्तख़त

सिर्फ दफतर के लिए

मैम्बरशिप नं०...............................

फीस .... से ....तक अदा

रिमार्क ....

मेम्बर बनाने वाले का नाम और पता

इशाअत हर अँग्रेज़ी महीने की पहली तारीख़ को

मेम्बरी फ़ीस 75 रू० सालाना

मेम्बर बन जाने वालों के लिए इदारे की तरफ़ से

- ❖ एक मेम्बर बनाने वाले को एक गुलदस्तए ख़िताबत किताब
- ❖ एक साथ तीन मेम्बर बनाने वाले को एक डायरी
- ❖ एक साथ पाँच मेम्बर बनाने वाले को किताब सुल्हे हसन या प्यास या मजालिसे ख़तीबे आज़म
- ❖ एक साथ दस मेम्बर बनाने वाले को एक मुतालेअए कुरआन

नोट स्टाक बाक़ी रहने तक

पता :
तनज़ीमुल मकातिब
गोला गंज, लखनऊ- 226018 यू० पी०
फोन : 215115 फैक्स: 228923
E-MAIL: tanzeem_lko@satyam.net.in

❁ ख़ास तारीख़ें ❁

❁ 9 रबीउलअव्वल ईद–ए–ज़हरा अ०

❁ 10 रबीउलअव्वल जनाब ख़दीजा का अक़्द

❁ 14 रबीउलअव्वल यज़ीद की मौत सन् 64 हि०

❁ 17 रबीउलअव्वल विलादत रसूल–ए–अकरम स०

❁ 17 रबीउलअव्वल विलादत इमाम जाफ़र सादिक़ अ० सन् 83 हि०

❁ 2 रबीउस्सानी मस्जिद अक़्सा की नीव पड़ी

अल्लाह ने फ़रमाया!

मेरी इज़्ज़त व जलाल की क़सम
मैं जब किसी बन्दे पर रहम
करना चाहता हूँ तो उसके गुनाहों
का हिसाब यहीं कर देता हूँ।
कभी बीमारी के ज़रीए
कभी दहशत के ज़रीए
और अगर कुछ बाक़ी रह जाता है
तो मौत में सख़्ती कर देता हूँ।

(हदीस–ए–कुदसी)

TANZEEM UL MAKATIB

GOLAGANJ, LUCKNOW-226018, U.P. INDIA

Phone: 215115, Fax : 228923
E-mail : tanzeem@tanzeem.com

अल्लाह ने फ़रमाया!

मेरी इज़्ज़त व जलाल की क़सम
मैं जब किसी बन्दे पर रहम
करना चाहता हूँ तो उसके गुनाहों
का हिसाब यहीं कर देता हूँ।
कभी बीमारी के ज़रीए
कभी दहशत के ज़रीए
और अगर कुछ बाक़ी रह जाता है
तो मौत में सख़्ती कर देता हूँ।

(हदीस-ए-कुदसी)

TANZEEM UL MAKATIB
GOLAGANJ, LUCKNOW-226018, U.P. INDIA
Phone: 215115, Fax : 228923
E-mail : tanzeem@tanzeem.com